Bill No. 3/07-08

106.

2008-0264

आतुर युक्त्यादि परीक्षा — By the Scholars of Central Institute of Research in Indigenous Systems of Medicines. Jamnagar, nd..

Indira Gandhi National Centre for the Arts

1371

18

# आतुरप्रकृत्यादिपरीक्षा

**CENTRAL INSTITUTE OF RESEARCH**

**IN INDIGENOUS SYSTEMS OF MEDICINE**

**JAMNAGAR, INDIA**

1371

DATA ENTERED
Date 28/06/08

615.536

KALANIDHI
Rare Book Collection
ACC No.: R-264
IGNCA Date: 25.3.08

SANS
615.536
JAH

## *आतुरबलप्रमाणपरिज्ञानम्—

१. प्रकृतितः
२. सारतः
३. संहननतः
४. प्रमाणतः
५. सात्म्यतः
६. सत्त्वतः
७. आहारशक्तितः
८. व्यायामशक्तितः
९. वयस्तः
१०. देशतः†

Indira Gandhi National Centre for the Arts

---

* आतुरं परीक्षेत प्रकृतितश्च, विकृतितश्च, सारतश्च, संहननतश्च, प्रमाणतश्च, सात्म्यतश्च, सत्त्वतश्च, आहारशक्तितश्च, वयस्तश्चेति बलप्रमाणविशेषग्रहणहेतोः ॥ ( च. वि. अ. ८ )

† देशस्तु भूमिरातुरश्च । तत्र भूमिपरीक्षा आतुरपरिज्ञानहेतोर्वा स्यादौषधपरिज्ञानहेतोर्वा ॥

आतुरस्तु खलु कार्यदेशः । तस्य परीक्षा आयुषः प्रमाणज्ञान हेतोर्वा स्याद्, बलदोषप्रमाणज्ञानहेतोर्वा ॥ ( च. वि. अ. ८ )

---

१ विकृतितश्चेति विकृतिरुच्यते विकारः । तत्र विकारं हेतु दोष-दूष्य-प्रकृति-देश-काल-बलविशेषैर्लिंगतश्च परीक्षेत ॥ एवं प्रकृत्यादीनां विकृतिवर्ज्यानां भावानां प्रवरमध्यावरविभागेन बलविशेषं विभजेत् । विकृतिबलत्रैविध्येन तु दोषबलं त्रिविधमनुमीयते । इति चरकोक्तेरत्र आतुरबलप्रमाणपरिज्ञाने विकृतिवर्णनं नाङ्गीक्रियते ॥

## प्रकृति-तालिका

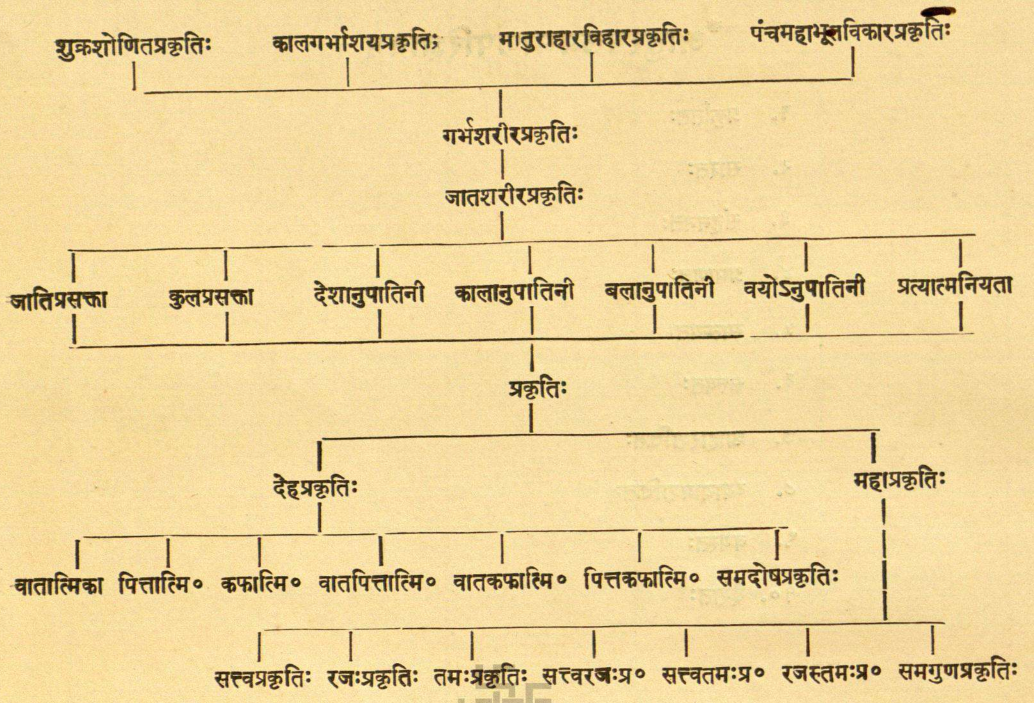


### प्रकृतिविज्ञानम्

प्रकृतिः—स्त्री० प्रकरोति प्र + कृ कर्त्तरि क्तिच्, भावादौ क्तिन् वा। स्वभावे लिङ्गे ( शब्दस्तोम० )। 'धातुसाम्यं प्रकृतिरारोग्यम्' ( च. सू. ९ चक्रपाणिः )

१ शुक्रशोणितसंयोगे यो भवेद्दोष उत्कटः ।
प्रकृतिर्जायते तेन······॥ ( सु. शा. ४ ) } गर्भशरीरप्रकृतिः

( १ ) 'शुक्रशोणितप्रकृतिं ( २ ) कालगर्भाशयप्रकृतिं ( ३ ) मातुराहारविहारप्रकृतिं ( ४ ) महाभूतविकार-प्रकृतिं च गर्भशरीरमपेक्षते। एतानि हि येन येन दोषेणाधिकेनेकेन वा समनुबध्यन्ते, तेन तेन दोषेण गर्भोऽनुबध्यते, ततः सा दोषप्रकृतिरुच्यते मनुष्याणां गर्भादिप्रवृत्ता। तस्मात् श्लेष्मलाः प्रकृत्या केचित्, पित्तलाः केचित्, वातलाः केचित्, संसृष्टाः केचित्, समधातवः केचित्।' ( च. वि. ८ )

'कालादयश्च शुक्रशोणितमेव कुर्वन्तः प्रकृतिजनकाः भवन्ति इति तन्त्रान्तरे शुक्रशोणितगतदोषेणैव प्रकृत्युत्पादो दर्शितः ॥ ( चक्रपाणिः )

'एतानि तु शुक्रादीनि शुक्रशोणिते वा, यादृगवस्थो दोषस्तादृग्गर्भे प्रकृतिर्भवति, यथा शुक्रशोणितमेलकाले यो दोष उत्कृष्टो भवति, स प्रकृतिमारभते, एवंगर्भाशयस्थश्च दोषः। मातुराहारविहारौ तत्कालीनौ यद्दोषकरणस्वभावौ, सा च प्रकृतिर्गर्भशरीरे भवति। एषु च प्रकृत्यारम्भकेषु कारणेषु यद् बलवद्भवति कारणान्तरबृंहितं च, तदेव प्रकृत्यारम्भकं भवति।( चक्रपाणिः )

'तत्र प्रकृत्यादीन् भावान् व्यासतो व्याचिकीर्षुः प्रतिजानीते। तत्र प्रकृतिं विवक्षुः गर्भशरीरमेतेषां प्रकृतीरनुसरत् स्वां प्रकृतिं लभते इत्याह। इत्यादि।' ( चरकप्रदीपिका )

२ जातशरीरप्रकृतिः—'तत्र प्रकृतिर्जातिप्रसक्ता च, कुलप्रसक्ता च, देशानुपातिनी च, कालानुपातिनी च, वयोऽनु-

पातिनी च, प्रत्यात्मनियता च। (१) जाति (२) कुल (३) देश (४) काल (५) वयः (६) प्रत्यात्मनियता हि तेषां तेषां पुरुषाणां ते ते भावविशेषा भवन्ति।' ( च. इ. अ. १ )

'तथा पुनः सप्त प्रकृतयो जाति-कुल-देश-काल-वयोबलप्रत्यात्मसंश्रयाः। ( अ. सं. शा. ८ )

३ सप्त प्रकृतयो भवन्ति—दोषैः पृथक्, द्विशः, समस्तैश्च। ( सु. शा. ४ )

'सर्वगुणसमुदितास्तु समधातवः' ( च. वि. ८-१०० )

'समपित्तानिलकफाः केचिद्गर्भादिमानवाः। दृश्यन्ते वातलाः केचित् पित्तलाः श्लेष्मलास्तथा॥
तेषामनातुराः पूर्वे वातलाद्याः सदातुराः। दोषानुशयिता ह्येषां देहप्रकृतिरुच्यते॥' ( च. सू. ७ )

'तैश्च तिस्रः प्रकृतयो हीनमध्योत्तमाः पृथक्। समधातुः समस्तासु श्रेष्ठा, निन्द्या द्विदोषजाः॥'

( १—'शुक्रार्त्तवस्थैर्जन्मादौ विषेणेव विषक्रिमेः' ) ( अ. हृ. सू. १ )

त्रयस्तु पुरुषा भवन्ति आतुराः, वातलः पित्तलः श्लेष्मलश्चेति। तेषामिदं विशेषविज्ञानम्—वातलस्य वातनिमित्ताः, पित्तलस्य पित्तनिमित्ताः, श्लेष्मलस्य श्लेष्मनिमित्ता व्याधयः प्रायेण बलवन्तश्च भवन्ति। ( च. वि. ६ )

मिश्रप्रकृतयः—'द्वयोर्वा तिसृणां वाऽपि प्रकृतीनां तु लक्षणैः।
ज्ञात्वा संसर्गजा वैद्यः प्रकृतीरभिनिर्दिशेत्॥' ( सु. शा. ४ )

'संसर्गात् संसृष्टलक्षणाः। सर्वगुणसमुदितास्तु समधातवः।' ( च. वि. ८ )

'प्रकोपो वाऽन्यथाभावो क्षयो वा नोपजायते। प्रकृतीनां स्वभावेन जायते तु गतायुषः॥
विषजातो यथाकीटो न विषेण विपद्यते। तद्वत् प्रकृतयो मर्त्यं शक्नुवन्ति न बाधितुम्॥' ( सु. शा. ४ )

भौतिकप्रकृतयः—'प्रकृतिमिह नराणां भौतिकीं केचिदाहुः, पवनदहनतोयैः कीर्तितास्तास्तु तिस्रः।
स्थिरविपुलशरीरः पार्थिवश्च क्षमावान्, शुचिरथ चिरजीवी नाभसः खैर्महद्भिः॥' ( सु. शा. ४ )

उपशयानुपशयाभ्यां परीक्षा—

'यथास्वं प्रकोपणान्यासेवमानस्य क्षिप्रं स्वदोषः प्रकोपमापद्यते, न तथेतरौ दोषौ।' ( च. वि. ६ )

महाप्रकृतयः—

'प्रकृतीर्गुणैरपि पुनः प्राहुः स्म सप्तापरा' इति। गुणैः सत्त्वरजस्तमोभिरेकशो द्विशः समस्तैश्च सप्त महाप्रकृतयो भवन्ति, सप्त दोषतः सप्त गुणतः। इति नागार्जुनाचार्योक्तत्वात्॥

( डल्हणः सुश्रुतशारीरचतुर्थाध्यायनिबन्धसंग्रहव्याख्यायाम् )

---

१. तत्र केचिदाहुः—न समवातपित्तश्लेष्माणो जन्तवः सन्ति, विषमाहारोपयोगित्वान्मनुष्याणां, तस्माच्च वातप्रकृतयः केचित्, केचित्पित्तप्रकृतयः, केचित्पुनः श्लेष्मप्रकृतयो भवन्तीति। तच्चानुपपन्नं, कस्मात्कारणात्? समवातपित्तश्लेष्माणं ह्यरोगमिच्छन्ति भिषजः, यतः प्रकृतिश्चारोग्यम्। आरोग्यार्था च भेषजप्रवृत्तिः, सा चेष्टरूपा, तस्मात् सन्ति समवातपित्तश्लेष्माणः, न खलु सन्ति वातप्रकृतयः, पित्तप्रकृतयः श्लेष्मप्रकृतयो वा। तस्य तस्य किल दोषस्याधिक्यात् सा सा दोषप्रकृतिरुच्यते मनुष्याणां, न च विकृतेषु दोषेषु प्रकृतिस्थत्वमुपपद्यते, तस्मान्नैताः प्रकृतयः सन्ति; सन्ति तु खलु वातलाः पित्तलाः श्लेष्मलाश्च, अप्रकृतिस्थास्तु ते ज्ञेयाः॥ ( च. वि. ६ )

# प्रकृतिलक्षणानां महाभूतगुणैः सह सम्बन्धनिर्देशः

| महाभूतानि | | | | | गुणाः | दोषाः | | | प्रकृतिलक्षणानि— | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पृथिवी | आपः | तेजः | वायुः | आकाशः | | वातः | पित्तम् | कफः | वातस्य | पित्तस्य | कफस्य |
| + | + | | | | गुरुः | | | + | | | साराधिष्ठितावस्थितगतयः |
| | | + | + | + | लघुः | + | | | लघु चपल { गति-<br>चेष्टा-<br>आहार-<br>व्याहाराः | | |
| | + | | + | | शीतः | + | | + | शीतासहिष्णवः<br>प्रततशीतकोद्वेपक-<br>स्तम्भाः | | अल्प { क्षुत्-<br>तृष्णा-<br>सन्ताप-<br>स्वेददोषाः |
| | | + | | | उष्णः | | + | | | उष्णासहाः<br>उष्णमुखाः<br>सुकुमारावदातगात्राः<br>प्रभूत { विप्लु-<br>व्यङ्ग-<br>तिल-<br>पीडकाः<br>क्षुधावन्तः<br>पिपासावन्तः<br>क्षिप्र { वलि-<br>पलित-<br>खालित्यदोषाः<br>प्रायो मृदु- अल्प- कपिल- { श्मश्रु-<br>लोम-<br>केशाः | |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | + | | | | स्निग्धः | | | + | | | स्निग्धाङ्गाः<br>स्निग्धमूर्धजाः<br>स्निग्धच्छवयः<br>सुस्निग्धवर्णाः |
| + | | + | + | | रूक्षः | + | | | रूक्षापचिताल्पशरीराः<br>प्रतत-<br>क्षाम-<br>रूक्ष- } स्वराः<br>सन्न-<br>जर्जर-<br>जागरूकाः | | |
| + | + | | | | मन्दः | | | + | | | मन्दचेष्टा-<br>आहार-<br>व्याहाराः<br>मन्दगतयः<br>दीर्घसूत्राः<br>क्लेशसहिष्णवः |
| | | + | | | तीक्ष्णः | | + | | | तीक्ष्णाग्नयः<br>तीक्ष्णपराक्रमाः<br>क्लेशासहिष्णवः<br>दन्दशूकाः | सहिष्णवः { क्षुत्-<br>तृड्-<br>दुःख-<br>क्लेश-<br>घर्माणाम् |
| | | + | | | श्लक्ष्णः | | | + | | | श्लक्ष्णाङ्गाः |
| + | | + | + | | खरः | + | | | | | |
| + | | | | | सान्द्रः | | | + | | | उपचितसर्वांगाः<br>परिपूर्ण „ |

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

| महाभूतानि | | | | | गुणाः | दोषाः | | | प्रकृतिलक्षणानि— | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पृथिवी | आपः | तेजः | वायुः | आकाशः | | वातः | पित्तम् | कफः | वातस्य | पित्तस्य | कफस्य |
| | + | | | | द्रवः | | + | | | शिथिल मृदु { सन्धि- मांसाः-<br>प्रभूत { स्वेद- मूत्र- पुरीषाः | |
| | + | | | + | मृदुः | | | + | | | दृष्टिसुखसुकुमारावदातगात्राः |
| + | | | | | कठिनः | | | | | | |
| + | | | | | स्थिरः | | | + | | | परिनिश्चितवाक्यपदः<br>दृढशास्त्रमतिः<br>दृढवैरी<br>सुविभक्तगात्रः<br>स्थिरमित्रः<br>„ घनः<br>गूढ–स्निग्ध–श्लिष्ट-सन्ध्यस्थिमांसः<br>समदद्विरदेन्द्रतुल्यगतिः<br>स्थिरचित्तः<br>सुबद्धाङ्गः<br>दृढभक्तिपरायणः |
| | + | | | | सरः | | + | | | | |
| | | + | + | + | सूक्ष्मः | | | | | | |
| + | | | | | स्थूलः | | | | | | |
| | | + | + | | विशदः | + | | | स्फुटिताङ्गावयवाः<br>सततसन्धिशब्दगामिनः | | |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | + | | | | पिच्छिलः | | | + | | | |
| | + | | | | मधुरः | | | + | | | प्रभूत–शुक्र-<br>„ व्यवाय-<br>„ अपत्याः |
| + | | | | | सारः | | | + | | | सारसंहतस्थिरशरीराः |
| | | | | | स्तिमितः | | | + | | | अशीघ्र { आरम्भ-<br>क्षोभ-<br>विकाराः |
| | | | | | अच्छः | | | + | | | प्रसन्नदर्शन-<br>„ आननाः<br>प्रसन्न { वर्ण-<br>स्निग्ध { स्वराश्च |
| | | | | | विस्रम् | | + | | | प्रभूतपूति { कक्षा-<br>आस्य-<br>शिरः-<br>शरीर } गन्धाः | |
| + | | + | | | अम्लम् | | + | | | | |
| | | + | + | | कटु | | + | | | अल्प { शुक्र-<br>व्यवाय-<br>अपत्याः | |
| | | | + | | चलः | + | | | अनवस्थित– { सन्धि-<br>अक्षि-<br>भ्रू-<br>हनु-<br>ओष्ठ-<br>जिह्वा-<br>शिरः-<br>स्कन्ध-<br>पाणिपादाः | | |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| महाभूतानि | | | | | गुणाः | दोषाः | | | प्रकृतिलक्षणानि— | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पृथिवी | आपः | तेजः | वायुः | आकाशः | | वातः | पित्तम् | कफः | वातस्य | पित्तस्य | कफस्य |
| | | | | | बहुः | + | | | बहु { प्रलाप- शिरा- कण्डराप्रतानाः } बहुभुजः | | |
| | | | + | | शीघ्रः | + | | | शीघ्र { समारम्भ- क्षोभ- विकार- त्रास- राग- विराग- गतयः, वाचः, स्मरण- विस्मरण- श्रुतग्राहिणः } अल्पस्मृतयः | | |
| + | | | + | | परुषः | + | | | परुष { केश- नख- वदन- श्मश्रु- रोम- दशन- पाणि- पादाः } | | |

## प्रकृतिलक्षणानां पञ्चमहाभूतगुणैर्वातपित्तकफादिभिश्च सम्बन्धे प्रमाणानि

१. गुरुः—'गुरुशीतमृदुस्निग्धमधुरस्थिरपिच्छिलाः । श्लेष्मणः···········गुणाः।' ( च. सू. स्था. अ. १ श्लो. ६१ )

'श्लेष्मा हि स्निग्धश्लक्ष्णमृदुमधुरसारसान्द्रमन्दस्तिमितगुरुशीतपिच्छिलाच्छः' ( च. वि. अ. ८ )

गुरुखरकठिनमन्दस्थिरविशदसान्द्रस्थूलगन्धगुणबहुलानि पार्थिवानि । ( च. सू. अ. २६ )

'लघुर्गुरुस्तथा स्निग्धो रूक्षस्तीक्ष्ण इति क्रमात्। नभोभूवारिवातानां वह्नेरेते गुणाः स्मृताः' (भा. प्र. पू. खं.)

'गौरवमाप्यं पार्थिवञ्च' ( र. वै. अ. ३ सू. ११६ )

'स्पर्शादयोऽष्टौ वेगश्च गुरुत्वञ्च द्रवत्वकम्। रूपं रसस्तथा स्नेहो वारिण्येते चतुर्दश' ( कारि. ३१ )

'स्नेहहीना गन्धयुताः क्षितावेते चतुर्दश' ( का. ३२ )

'गौरवं जलभूम्योः पतनकारणम्' ( प्रशस्तपादभाष्य गुण प्र० )

स्थूलसान्द्रमन्दस्थिरगुरुकठिनं गन्धबहुलमीषत्कषायं प्रायशो मधुरमिति पार्थिवम् ( सु. सू. अ. ४१ )

'स्निग्धः शीतो गुरुर्मन्दः श्लक्ष्णो मृत्स्नः कफः स्मृतः । ( अ. हृ. सू. अ. १ श्लो. १२ )

२. लघुः—'द्रवस्निग्धशीतमन्दसरसान्द्रमृदुपिच्छिलरसगुणबहुलानि आप्यानि । उष्णतीक्ष्णसूक्ष्मलघुरूक्षविशदरूपगुणबहुलानि आग्नेयानि। लघुशीतरूक्षखरविशदसूक्ष्मस्पर्शगुणबहुलानि वायव्यानि। मृदुलघु सूक्ष्मश्लक्ष्णशब्दगुणबहुलानि आकाशात्मकानि ( च. वि. अ. ८ )

तत्र रूक्षो लघुः शीतः खरः सूक्ष्मश्चलोऽनिलः । ( अ. हृ. सू. अ. १ श्लो. ११ )

'लाघवमन्यदीयम्' ( र. वै. सू. ११७ अ. ३ )

'वातस्तु रूक्षलघुचलबहुशीघ्रशीतपरुषविशदः' ( च. वि. अ. ८ )

३. शीतम्—'शीतस्निग्धगुरुपिच्छिलास्तत्राप्याः ( र. वै. अ. ३ सू. ११२ )

शीतस्तिमितस्निग्धमन्दगुरुसरसान्द्रमृदुपिच्छिलरसबहुलमीषत्कषायाम्ललवणं मधुररसप्रायमाप्यम्' ( सु. सू. अ. ४१ )

'शीतस्पर्शवत्य आपः' ( तर्कसंग्रह द्र० प्र० )

वर्णः शुक्लो रसस्पर्शौ जले मधुरशीतलौ ( का० ३९ )

४. उष्णम्—'पित्तं सस्नेहतीक्ष्णोष्णं लघु विस्रं सरं द्रवम् ।' ( अ. हृ. सू. अ. १ श्लो. ११ )

'उष्णस्पर्शवत्तेजः' ( त. सं. )

'उष्णः स्पर्शस्तेजसस्तु' ( कारि. ४१ )

'पित्तमुष्णं तीक्ष्णं द्रवं विस्रमम्लं कटुकञ्च' ( च. वि. अ. ८ )

'उष्णतीक्ष्णसूक्ष्मरूक्षखरलघुविशदं रूपबहुलमीषदम्ललवणकटुकरसप्रायं विशेषतश्चोर्ध्वगतिस्वभावमिति तैजसम्' ( सु. सू. अ. ४१ )

'तैजसमौष्ण्यं तैक्ष्ण्यं च' ( र. वै. अ. ३ सू. ११३ )

५. स्निग्धः—'स्निग्धः शीतो गुरुर्मन्दः श्लक्ष्णो मृत्स्नः स्थिरः कफः ।' ( अ. हृ. सू. अ. १ श्लो. १२ )

'स्निग्धमाप्यम्' ( र. वै. अ. ३ सू. ११२ )

'स्नेहोऽपां विशेषगुणः । संग्रहमृजादिहेतुः ।' ( प्रशस्तपादभाष्यगुणप्र. )

'चूर्णादिपिण्डीभावहेतुर्गुणः स्नेहः । स जलमात्रवृत्तिः' ( त० सं. )

'स्नेहो जले स नित्योऽणावनित्योऽवयविन्यसौ । तैलान्तरे तत्प्रकर्षाद्दहनस्यानुकूलता ( कारिका. १५७ )

६. रूक्षः—'रौक्ष्य-वैशद्ये पार्थिव-वायव्ये' ( र. वै. अ. ३ सू. ११४ )

७. मन्दः—'स्थूलसान्द्रमन्देत्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. १ ) 'शीतस्तिमितमन्देत्यादि च' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. २ )
'शीतस्निग्धस्तिमितमन्देत्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. २ )

८. तीक्ष्णः—'तैजसमौष्ण्यं तैक्ष्ण्यञ्च' ( र. वै. अ. ३ सू. ११३ )
'उष्णतीक्ष्णेत्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र० ४३ )

९. श्लक्ष्णः—'तैजसं श्लक्ष्णत्वं नाम' ( र. वै. अ. २ सू. ५८ ) 'सुभृन्मणीनामिव स्पर्शः । स खलु भास्वरसामान्यादग्निनोत्पद्यते' इति तद्भाष्यम् । 'श्लक्ष्णसूक्ष्ममृदुव्यवायिविशदविविक्तमव्यक्तरसं शब्दबहुलमाकाशीयम्' सु. सू. अ. ४१ प्र. (५) ॥ ४ ॥ )

१०. खरः—'कर्कशत्वं वायव्यम्' ( र. वै. अ. २ सू. ६० ) 'वायुःशोषणात्मकत्वात् व्यूहकरणाच्च पद्मनालादिषु कर्कशहेतुर्भवति' इति तद्भाष्यम् । 'उष्णतीक्ष्णसूक्ष्मरूक्षखरेत्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (३) ॥ )

११. सान्द्रः—'स्थूलसान्द्रेत्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (१) ॥ ) शीतस्तिमितस्निग्धमन्दगुरुसरसान्द्रेत्यादि ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (२) ॥ )

१२. द्रवत्वम्—'द्रवत्वं स्पन्दनकर्मकारणम्' जलस्येति शेषः ( प्रशस्तपाद भा. गुण. ) 'सांसिद्धिकं द्रवत्वं स्यान्नैमित्तिकमथापरम् । सांसिद्धिकं तु सलिले द्वितीयं क्षितितेजसोः' ( कारिका गुणनि. १५४–१५५ श्लो. ) 'आद्यस्यन्दनाऽसमवायिकारणं द्रवत्वम् । तद् द्विविधम् । सांसिद्धिकम् , नैमित्तिकञ्च । सांसिद्धिकं जले, नैमित्तिकं पृथिवीतेजसोः । ( तर्कसंग्रह गुणनि. )

१३ मृदुः—'मार्दवमान्तरिक्षमाप्यञ्च' ( र. वै. अ. ३ । सू. ११५ ) 'शीतस्तिमितस्निग्धमन्दगुरुसरसान्द्रमृद्वित्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (२) ॥ ) 'श्लक्ष्णसूक्ष्ममृद्वित्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (४) ॥ )

१४. कठिनम्—'कठिनत्वं पार्थिवम्' ( र. वै. अ. ३ । सू. ५८ ) 'स्थूलसान्द्रमन्दस्थिरगुरुकठिनमित्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (१) ॥ )

१५. स्थिरः—'स्थूलसान्द्रमन्दस्थिरेत्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (१) ॥ )

१६. सरः—'शीतस्तिमितस्निग्धमन्दगुरुसरेत्यादि' ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (२) ॥ )

१७. सूक्ष्मः—'सूक्ष्मरूक्षखरशिशिरलघुविशदं स्पर्शबहुलमीषत्तिक्तं विशेषतः कषायमिति वायवीयम् । ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (४) ॥)

१८. स्थूलः—स्थूलेत्यादि ( सु. सू. अ. ४१–५ ॥ (१) ॥ )

१९. विशदः—'रौक्ष्य-वैशद्ये, पार्थिव-वायव्ये' ( र. वै. अ. ३ सू. ११४ ) 'उष्णतीक्ष्णसूक्ष्मरूक्षखरलघुविशदमित्यादि' (सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (३) ॥) 'श्लक्ष्णसूक्ष्ममृदुव्यवायिविशदेत्यादि' (सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (४) ॥

२०. पिच्छिलः—'शीत-स्निग्ध-गुरु-पिच्छिलास्तत्राप्याः' ( र. वै. अ. ३ सू. ११२ ) शीतस्तिमितस्निग्धमन्दगुरुसरसान्द्रमृदुपिच्छिलमित्यादि ( सु. सू. अ. ४१ प्र. ॥ (२) ॥ )

२१. मधुरम्—'जले मधुर एव' ( तर्कसंग्रह ) 'वर्णः शुक्लो रसस्पर्शौ जले मधुरशीतलौ' ( कारिकावली )

२२. सारः—'श्लेष्मा हि स्निग्धश्लक्ष्णमृदुमधुरसारेत्यादि' ( च. वि. अ. ८ )

२३. स्तिमितः—'श्लेष्मा हि स्निग्धश्लक्ष्णमृदुमधुरसारसान्द्रमन्दस्तिमितेत्यादि' ( च. वि. अ. ८ )

२४. अच्छः— " " " " " " " "

२५. विस्रम्—'पित्तमुष्णं तीक्ष्णं द्रवं विस्रमित्यादि' ( च. वि. अ. ८ )

२६. अम्ल-कटु— " " अम्लकटुकञ्चेति ( च. वि. ८ )

२७. चलः—'वातस्तु रूक्षचलेत्यादि' ( च. वि. अ. ८ )

२८. बहुः—'वातस्तु रूक्षलघुचलबहु' इत्यादि ( च. वि. अ. ८ )

२९. शीघ्रम्—'वातस्तु रूक्षलघुचलबहुशीघ्र' इत्यादि ( च. वि. अ. ८ )

३०. परुषः—'वातस्तु रूक्षलघुचलबहुशीघ्रपरुषविशदः' ( च. वि. अ. ८ )

अष्टाङ्गहृदये—

तत्र द्रव्यं गुरुस्थूलस्थिरगन्धगुणोल्बणम् ।
पार्थिवं गौरवस्थैर्यसङ्घातोपचयावहम् ॥

द्रवशीतगुरुस्निग्धमन्दसान्द्ररसोल्बणम् ।
आप्यं स्नेहनविष्यन्दक्लेदप्रह्लादबन्धकृत् ॥

रूक्षतीक्ष्णोष्णविशदसूक्ष्मरूपगुणोल्बणम् ।
आग्नेयं दाहभावर्णप्रकाशपचनात्मकम् ॥
वायव्यं रूक्षविशदलघुस्पर्शगुणोल्बणम् ।
रौक्ष्यलाघववैशद्यविचारग्लानिकारकम् ॥

नाभसं सूक्ष्मविशदलघुशब्दगुणोल्बणम् ।
सौषिर्यलाघवकरम्··············॥
( अ. हृ. सू. अ. ९ श्लो. ५-९ )

क्ष्माऽम्भोऽग्निक्ष्माऽम्बुतेजःखवाय्वग्न्यनिलगोऽनिलैः ।
द्वयोल्बणैः क्रमाद्भूतैर्मधुरादिरसोद्भवः ॥
( अ. हृ. सू. अ. १० श्लो. १ )

काश्यपसंहितायाम्—

···········वायोः स्वं रूपमुच्यते ।
शैत्यं रौक्ष्यं लघुत्वञ्च गतिश्चेत्यथ कर्म च ॥

विशदारुणपारुष्यसुप्तिसङ्कोचवैरसम् ।
शूलतोदकषायत्वशौषिर्यखरकम्पनम् ॥

सादहर्षौ काश्यवर्तव्यासस्रंसनभेदनम् ।
उद्वेष्टदंशभङ्गाश्च शोषश्चानिलकर्म तत् ॥
( का. सं. सू. अ. २७ श्लो. ३०-३३ )

········पित्तात्यैः स्वं रूपं तस्य वक्ष्यते ।
लाघवं तैक्ष्ण्यमौष्ण्यञ्च वर्णाः शुक्लारुणादृते । वैगन्ध्यं कटुकाम्लत्वमीषत्स्नेहश्च··
( का. सं. सू. अ. २७ श्लो. ३८-३९ )

स्नेहशैत्यगुरुश्वेतमाधुर्यं कफलक्षणम् । श्लक्ष्णता च ( का. सं. सू. अ. २७ श्लो. ४४-४५ )

'पृथिव्यापो गुर्व्यः' 'अग्निवायू हि लघू ( सु. सू. अ. ४२-६ )

'तीक्ष्णोष्णावाग्नेयौ' 'शीतपिच्छिलावम्बुगुणभूयिष्ठौ' 'पृथिव्यम्बुगुणभूयिष्ठः स्नेहः' 'तोयाकाशगुणभूयिष्ठं मृदुत्वं' 'वायुगुणभूयिष्ठं रौक्ष्यं' क्षितिसमीरणगुणभूयिष्ठं वैशद्यम् ( सु. सू. अ. ४१-११ )

'भूम्यम्बुगुणबाहुल्यान्मधुरः' 'भूम्यग्निगुणबाहुल्यादम्लः' 'तोयाग्निगुणबाहुल्याल्लवणः' 'वाय्वग्निगुणबाहुल्यात्कटुकः' 'वाय्वाकाशगुणबाहुल्यात्तिक्तः' 'पृथिव्यनिलगुणबाहुल्यात्कषायः' ( सु. सू. अ. ४२-३ )

'मधुरतिक्तकषायाः सौम्याः' 'कट्वम्ललवणा आग्नेयाः' 'मधुराम्ललवणाः स्निग्धा गुरवश्च, कटुतिक्तकषाया रूक्षा लघवश्च, सौम्याः शीताः, आग्नेयाः उष्णाः' ( सु. सू. अ. ४२-७ )

शैत्यरौक्ष्यलाघववैशद्यवैष्टम्भ्यगुणलक्षणो वायुः ( सु. सू. अ. ४२ )
औष्ण्यतैक्ष्ण्यरौक्ष्यलाघववैशद्यगुणलक्षणं पित्तम् । „ „
माधुर्यस्नेहगौरववैशद्यपैच्छिल्यगुणलक्षणः श्लेष्मा „ „

## दोष-प्रकृतितः परीक्षा

### ( शरीरावयवानुसारिणी )

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| देहः | स्थाणुः | | उपचितः |
| ( आकृतिः ) | अल्पः | मृदुः, | स्निग्धः |
| | कृशः | मध्यबलः | बलवान् |
| | दीर्घः | प्रभूतपिप्लुः | मांसलः |
| | अपचितः | प्रभूतव्यंगः | श्लक्ष्णः |
| | रूक्षः | प्रभूततिलः | दृष्टिसुखः |
| | खरः | शुष्कः | चारुः |
| | परुषः | सुकुमारः | सुकुमारः |
| | दुर्बलः | अवदातः | अवदातः |
| | श्लथः | पीताभः | सारः |
| | | गौरः | संहतः |
| | तनु, बहु } शिराप्रतानः | उष्णः | स्थिरः |
| | | दुर्गन्धः | |
| | स्फुटित, स्तब्ध, बलिबहुल } अंगावयवः | शिथिलः<br>सुकृशः<br>अश्लथः | |
| | धूसरः | | |
| | स्फुटितः | | उपचितसर्वांगा |
| देहरचना | विषमोपचिता | शिथिला | मांसला |
| | धमनीतता | अयथोपचिता | परिपूर्णा |
| | विषम, संहत } शरीरा | शिथिल, मृदु } मांसा | समा<br>समसुविभक्ता |
| | | शिथिल, मृदु } संधिबन्धना | सारसंहतस्थिरशरीरा<br>सुश्लिष्टसारा |
| | | | सुश्लिष्टसन्धिबन्धना |

Indira Gandhi Na
Centre for the Arts

---

### दोष-प्रकृतिजदेहप्रमाणानि

वातस्तु रूक्षलघुचलबहुशीघ्रशीतपरुषविशदः। तस्य रौक्ष्याद्वातला रूक्षापचिताल्पशरीराः, प्रततरूक्षक्षामभिन्नमन्दसक्तसन्नजर्जरस्वरा जागरूकाश्च, लघुत्वाल्लघुचपलगतिचेष्टाहाराः, चलत्वादनवस्थित सन्ध्यस्थिभ्रूहन्वोष्ठजिह्वाशिरःस्कन्धपाणिपादाः, बहुत्वाद् बहुप्रलापकण्डरासिराप्रतानाः, शीघ्रत्वात्शीघ्रसमारम्भक्षोभविकाराः शीघ्रत्रासरागविरागाः श्रुतग्राहिणोऽल्पस्मृतयश्च, शैत्याच्छीतासहिष्णवः प्रततशीतकोद्वेपकस्तम्भाः, पारुष्यात्परुषकेशश्मश्रुरोमनखदशनवदनपाणिपादाङ्गाः, वैशद्यात् स्फुटिताङ्गावयवाः सततसन्धिशब्दगामिनश्च भवन्ति। त एवं गुणयोगाद्वातलाः प्रायेणाल्पबलाश्चाल्पायुषश्चाल्पापत्याश्चाल्पसाधनाश्चाधनाश्च भवन्ति।

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| मुखम् | दुर्भगम् | सुकुमारम् | सुकुमारम् |
| | परुषम् | दुर्भगम् | सुभगम् |
| | प्रसुप्तम् | अवदातम् | अवदातम् |
| | | उष्णम् | स्निग्धम् |
| | | सदाव्यथितम् | प्रशस्तम् |
| | | प्रभूतास्यगन्धम् | प्रियदर्शनम् |
| | | | महत् |
| | | | उपचितम् |
| | | | उद्घाटितम् |
| ललाटम् | — | — | महत् |
| | | | उपचितम् |
| भ्रूः | अनवस्थिता | | मन्दगतिका |
| | शीघ्रगतिका | | |
| नेत्रम् | खरम् | ताम्रम् | रक्तान्तम् |
| | धूसरम् | तनु | प्रसन्नम् |
| | वृत्तम् | पिङ्गलम् | शुक्लम् |
| | अनवस्थितम् | शीतप्रियम् | आयतम् |
| | परुषम् | प्रसुप्तम्–किंचिदुद्घाटितम् | विशालम् |
| | चलम् | | पद्मलम् |
| | तनु | | सुस्निग्धम् |
| | रूक्षम् | | चारु |
| | स्तब्धम् | | सुव्यक्तम् |
| | अल्पम् | | सितम् |
| | उच्छ्रितम् | | |
| | अचारु | | |
| | असितम् | | |
| | सुप्तम् | | |
| | उन्मीलिम् | | |
| | मृतोपमम् | | |

---

पित्तमुष्णं तीक्ष्णं द्रवं विस्रमम्लं कटुकञ्च । तस्यौष्ण्यात् पित्तला भवन्त्युष्णासहाः, उष्णमुखाः, सुकुमारावदातगात्राः, प्रभूतपिप्लुव्यङ्गतिलकपिडकाः, क्षुत्पिपासावन्तः, क्षिप्रवलीपलितखालित्यदोषाः, प्रायो मृद्वल्पकपिलश्मश्रुलोमकेशाः, तैक्ष्ण्यात्तीक्ष्णपराक्रमाः, तीक्ष्णाग्नयः, प्रभूताशनपानाः, क्लेशासहिष्णवः, दन्दशूकाः, द्रवत्वाच्छिथिलमृदुसन्धिबन्धमांसाः, प्रभूतसृष्टस्वेदमूत्रपुरीषाश्च, विस्रत्वात्प्रभूतपूतिकक्षास्यशिरःशरीरगन्धाः, कट्वम्लत्वादल्पशुक्रव्यवायापत्याः; त एवंगुणयोगात् पित्तला मध्यबला मध्यायुषो मध्यज्ञानविज्ञानवित्तोपकरणवन्तश्च भवन्ति ।

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| तारका | विवृता | — | घननीला |
| पक्ष्म | तनु | तनु | दीर्घम् |
| | अल्पम् | अल्पम् | घनम् |
| | असितम् | | शुक्लम् |
| केशाः | अल्पाः | क्षिप्रपलिताः | अलिनीलाः |
| | परुषाः | खलतियुक्ताः | कुटिलाः |
| | रूक्षाः | मृदवः | स्थिराः |
| | खराः | अल्पाः | अतिमृदवः |
| | धूसराः | कपिलाः | अतिस्निग्धाः |
| | स्फुटिताः | पिंगाः | अतिघनाः |
| | अतिसूक्ष्माः | | सुबन्धनाः |
| | | | दीर्घाः |
| | | | बहुलाः |
| श्मश्रु | अल्पम् | मृदु | अतिनीलम् |
| | परुषम् | अल्पम् | कुटिलम् |
| | रूक्षम् | कपिलम् | स्थिरम् |
| | खरम् | | अतिमृदु |
| | धूसरम् | | अतिस्निग्धम् |
| | स्फुटितम् | | अतिघनम् |
| ओष्ठौ | चलौ | ताम्रौ | स्थिरौ |
| | अनवस्थितौ | | |
| दन्ताः | अतिसूक्ष्माः | विशुद्धाः | श्लक्ष्णाः |
| | परुषाः | बहुलाः | स्निग्धाः |
| | तनवः | | सुबन्धनाः |
| | रूक्षाः | | दीर्घाः |
| | स्तब्धाः | | |
| | अल्पाः | | |

---

श्लेष्मा हि स्निग्धश्लक्ष्णमृदुमधुरसारसान्द्रमन्दस्तिमितगुरुशीतपिच्छिलाच्छः, तस्य स्नेहाच्छ्लेष्मलाः स्निग्धाङ्गाः, मृदुत्वाद् दृष्टिसुखसुकुमारावदातगात्राः, माधुर्यात्प्रभूतशुक्रव्यवायापत्याः, सारत्वात्सारसंहतस्थिरशरीराः, सान्द्रत्वादुपचितपरिपूर्णसर्वाङ्गाः, मन्दत्वान्मन्दचेष्टाहारविहाराः, स्तैमित्यादशीघ्रारम्भक्षोभविकाराः, गुरुत्वात्साराधिष्ठितावस्थितगतयः, शैत्यादल्पक्षुत्तृष्णासन्तापस्वेददोषाः, पिच्छिलत्वात् सुश्लिष्टसारसन्धिबन्धनाः, तथाच्छत्वात् प्रसन्नदर्शनाननाः प्रसन्नस्निग्धवर्णस्वराश्च भवन्ति । त एवंगुणयोगाच्छ्लेष्मलाः बलवन्तो वसुमन्तो विद्यावन्तः ओजस्विनः शान्ताः आयुष्मन्तश्च भवन्ति ।

( च. वि. अ. ८ )

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| जिह्वा | अनवस्थिता | ताम्रा | स्थिरा |
| तालु | — | ताम्रम् | — |
| हनुः | अनवस्थितः | — | — |
| वक्षः | — | — | पृथु, पीनम् |
| उदरम् | अपचितम् | — | उपचितम् |
| स्कन्धौ | अनवस्थितौ | — | — |
| बाहू | — | — | महान्तौ प्रलम्बौ |
| ऊरू | — | — | महान्तौ |
| पिण्डिके | ह्रस्वे | | दीर्घे |
| (जंघे) | कठिने | — | मृद्वी |
| पाणिः | अनवस्थितः | ताम्रतलः | श्लक्ष्णः |
| | परुषः | — | स्निग्धः |
| | स्फुटितः | — | — |
| पादः | अनवस्थितः | ताम्रतलः | श्लक्ष्णः |
| | परुषः | — | स्निग्धः |
| | स्फुटितः | — | — |
| नखाः | परुषाः | ताम्राः | दीर्घाः |
| | अल्पाः | | मृदवः |
| | रूक्षाः | | स्निग्धाः |
| | तनवः | | श्लक्ष्णाः |
| | स्तब्धाः | | शुक्लाः |
| | स्फुटिताः | | सुबन्धाः |
| | खराः | | बहुलाः |
| | धूसराः | | |
| | अल्पवृद्धिमन्तः | | |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वातप्रकृतिः प्रजागरूकः शीतद्वेषी दुर्भगः स्तेनो मात्सर्यनार्यो गन्धर्वचित्तः स्फुटितकरचरणोऽल्परूक्षश्मश्रुनखकेशः क्राथी दन्तखादी च भवति ।

अधृतिरदृढसौहृदः कृतघ्नः कृशपरुषो धमनीततः प्रलापी । द्रुतगतिरटनोऽनवस्थितात्मा वियति च गच्छति संभ्रमेण सुप्तः
अव्यवस्थितमतिश्चलदृष्टिर्मन्दरत्नधनसंचय ( मित्रः ) शीलः । किंचिदेव विलपत्यनिबद्धं मारुतप्रकृतिरेष मनुष्यः ॥
वातिकाश्चाजगोमायुशशाखूष्ट्रशुनान्तथा । गृध्रकाकखरादीनामनूकैः कीर्तिता नराः ॥

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| कण्डराः | बह्व्यः | | |
| सिराः | प्रतानवत्यः | | |
| | तताः | | |
| स्नायु-सन्धयः | अनवस्थिताः | शिथिलाः | व्यवस्थिताः |
| | शिथिलाः | मृदवः | सुश्लिष्टाः |
| | चलाः | | ससाराः |
| | वेपनाः | | संहताः |
| | स्तब्धाः | | गूढाः |
| | शब्दवन्तः | | स्निग्धाः |
| त्वक् | रूक्षा | प्रभूतपिप्लुः | स्निग्धा |
| | परुषा | प्रभूतव्यंगा | मृदुः |
| | खरा | प्रभूततिला | |
| | अस्वेदना | प्रभूतकालका, | |
| | शीता | उष्णा, | शीत |
| | शीतासहिष्णुः | अतिस्वेदना, | |
| | अल्पस्वेदा | उष्णासहिष्णुः | |
| | | क्षिप्रवलिः | |
| वर्णः | कृष्णः | गौरः | गौरः |
| | धूसरः | पीतः | प्रसन्नः |
| | | पिङ्गः | शुक्लः |
| | | अतिपिङ्गः | स्निग्धः |
| | | | प्रियंगुः |
| | | | गोरोचनाभः |
| | | | विशुद्धः |
| | | | दूर्वाभः |

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

---

पित्तप्रकृतिस्तु स्वेदनो दुर्गन्धः पीतशिथिलाङ्गस्ताम्रनखनयनतालुजिह्वौष्ठपाणिपादतलः दुर्भगो वलीपलितखालित्युजुष्टः बहुभुगुष्णद्वेषी क्षिप्रकोपप्रसादः मध्यबलो मध्यायुश्च भवति ।

मेधावी निपुणमतिर्विगृह्य वक्ता तेजस्वी समितिषु दुर्निवारवीर्यः । सुप्तः सन् कनकपलाशकर्णिकारान् संपश्येदपि च हुताशविद्युदुल्काः ॥

न भयात्प्रणमेदनतेष्वमृदुः प्रणतेष्वपि सान्त्वनदानरुचिः । भवतीह सदा व्यथितास्यगतिः स भवेदिह पित्तकृतप्रकृतिः ।
भुजङ्गोलूकगन्धर्वयक्षमार्जारवानरैः । व्याघ्रर्क्षनकुलानूकैः पैतिकास्तु नराः स्मृताः ॥

## प्रकृतितः परीक्षा

### ( प्रकीर्णलक्षणानुसारम् )

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| आयुः | अल्पम् | मध्यमम् | दीर्घम् |
| बाल्यावस्था | रोदना | समा | सौम्या |
| | लोला | | नातिरोदना |
| | | | नातिलोला |
| दर्शनम् | दुर्भगम् | समम् | प्रियदर्शनम् |
| | | | प्रसन्नम् |
| | | | सुभगम् |
| | | | स्निग्धम् |
| | | | चारु |
| देहभारः | न्यूनः | किंचिन्न्यूनः | समः |
| | | | प्रमाणाधिकः |
| अन्य लक्षणानि— | | | |
| | सततसन्धिशब्दगतिः | शीघ्रसमारब्धः | विद्वान् |
| | प्रततशीतकः | शीघ्रविकारः | शीघ्रप्रसादः |
| | प्रततोद्वेजकः | दीर्घाक्रमः | दृढवैरः |
| | शीघ्रत्रासः | दन्दशूकः | अन्तःप्रकोपः |
| | शीघ्ररागः | | |
| | शीघ्रविरागः | | |
| | दन्तनखखादी | | |
| | दुर्भगः | | |
| | प्रोद्वद्धपिण्डिकः | | |

---

श्लेष्मलप्रकृतिस्तु दूर्वेन्दीवरनिस्त्रिंशार्द्रारिष्टकशरकाण्डानामन्यतमवर्णः सुभगः प्रियदर्शनो मधुरप्रियः कृतज्ञो धृतिमान् सहिष्णुरलोलुपो बलवान् चिरग्राही दृढवैरश्च भवति ।

शुक्लाक्षः कुटिलालिनीलकेशो लक्ष्मीवाञ्जलदमृदङ्गसिंहघोषः ।
सुप्तः सन् सकमलहंसचक्रवाकान् संपश्येदपि च जलाशयान् मनोज्ञान् ॥
रक्तान्तनेत्रः सुविभक्तगात्रः स्निग्धच्छविः सत्त्वगुणोपपन्नः ।
क्लेशक्षमो मानयिता गुरूणां ज्ञेयो बलासप्रकृतिर्मनुष्यः ॥
दृढशास्त्रमतिः स्थिरमित्रधनः परिगण्य चिरात्प्रददाति बहु ।

## प्रकृतितः परीक्षा

### ( शरीरावयवक्रियानुसारिणी )

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| ऊष्मा | अल्पः | अति | समः |
| | विषमः | | |
| दृष्टिः | चला | | |
| बलम् | अल्पम् | मध्यमम् | उत्तमम् |
| पित्तम् | अल्पम् | | |
| अपत्यम् | अल्पम् | मध्यम् | प्रभूतम् |
| निद्रा | अल्पा | | प्रभूता |
| | किञ्चिदुत्फारितनेत्रा | उत्स्फारितमुखा | |
| चेष्टा | लघुः, चपला | | मन्दा |
| व्याहारः | प्रलापः | लघुः | मन्दः |
| | अनिबद्धः | चपलः | परिनिष्ठितः |
| | बहुभाषितः | | अल्पः |
| | | | मितः |
| शुक्रम् | अल्पम् | मध्यम | प्रभूतम् |
| व्यवायः | अल्पः | मध्यः | प्रभूतः |
| आहारः | लघुः | प्रभूताशनः | अल्पाशनः |
| | चपलः | प्रभूतपानः | अल्पपानः |
| | | दन्दशूकः | मन्दाहारः |

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

---

परिनिश्चितवाक्यपदः सततं गुरुमानकरश्च भवेत्स सदा ॥
ब्रह्मरुद्रेन्द्रवरुणैः सिंहाश्वगजगोवृषैः ।
तार्क्ष्यहंससमानूकाः श्लेष्मप्रकृतयो नराः ॥

( सु० शा० अ० ४ श्लो० ६४–७६ )

प्रायोऽत एव पवनाध्युषिता मनुष्या दोषात्मकाः स्फुटितधूसरकेशगात्राः ।
शीतद्विषश्चलधृतिस्मृतिबुद्धिचेष्टा–सौहार्ददृष्टिगतयोऽतिबहुप्रलापाः ॥
अल्पवित्तबलजीवितनिद्राः सन्नसक्तचलजर्जरवाचः ।
गीतहासमृगयाकलिलोला नास्तिका बहुभुजः सविलासाः ॥
मधुराम्लकटूष्णसात्म्यकांक्षाः कृशदीर्घाकृतयः सशब्दयाताः ।
न दृढा न जितेन्द्रिया न चार्या न च कान्तादयिता बहुप्रजा वा ॥

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| क्षुधा | | अधिका | अल्पा |
| तृषा | | अधिका, प्रभूता | अल्पा |
| विहारः | अटनः | | निद्राबहुलः |
| | बहुप्रलापः | | |
| | शीघ्रसमारम्भः | | दीर्घसूत्रतायुतः |
| व्यवहारः | चपलः | क्षिप्रप्रकोपः | मन्दः |
| | शीघ्रक्षोभः | क्षिप्रप्रासादः | अशीघ्रक्षोभः |
| | ” त्रासः | | ” आरम्भः |
| | ” विकारः | | ” विकारः |
| | | | अल्पक्रोधः |
| | | | ऋजुः |

---

नेत्राणि चैषां खरधूसराणि वृत्तान्यचारूणि मृतोपमानि ।
उन्मीलितानीव भवन्ति सुप्ते शैलद्रुमांस्ते गगनञ्च यान्ति ॥
अधन्या मत्सराध्माताः स्तेनाः प्रोद्वद्धपिण्डिकाः ।
श्वशृगालोष्ट्रगृध्राखुकाकाऽनूकाश्च वातिकाः ॥

( अ० हृ० शा० अ० ३ श्लो० ८५-८९ )

पित्तं वह्निर्वह्निजं वा यदस्मात् पित्तोद्रिक्तस्तीक्ष्णतृष्णाबुभुक्षः ।
गौरोष्णाङ्गस्ताम्रहस्ताङ्घ्रिवक्त्रः शूरो मानी पिङ्गकेशोऽल्परोमा ॥
दयितमाल्यविलेपनमण्डनः सुचरितः शुचिराश्रितवत्सलः ।
विभवसाहसबुद्धिबलान्वितो भवति भीषु गतिर्द्विषतामपि ॥
मेधावी प्रशिथिलसन्धिबन्धमांसो नारीणामनभिमतोऽल्पशुक्रकामः ।
आवासः पलिततरङ्गनीलिकानां भुङ्क्तेऽन्नं मधुरकषायतिक्तशीतम् ॥

# प्रकृतितः परीक्षा
## ( शारीरक्रियानुसारिणी )

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| श्वासः | अल्पः | उष्णः | |
| | | अधिकः | |
| स्वरः | प्रततः | दीनः | स्निग्धः |
| | रूक्षः | | प्रसन्नः |
| | क्षामः | | गम्भीरः |
| | सक्तः | | जलदध्वनिनिभः |
| | सन्नः | | मृदङ्ग " " |
| | जर्जरः | | सिंह " " |
| | भिन्नः | | |
| | भग्नः | | |
| | मन्दः | | |
| | चलः | | |
| | तनुः | | |
| | स्तब्धः | | |
| | अल्पः | | |
| गतिः | लघुः | द्रुता | सारा |
| | चपला | चला | अधिष्ठिता |
| | व्यथिता | | अवस्थिता |
| | | | समदगजसमा |
| | | | सिंहसमा |
| अग्निः | विषमः | तीक्ष्णः | मन्दः |
| कोष्ठः | क्रूरः | मृदुः | मध्यः |

---

घर्मद्वेषी स्वेदनः पूतिगन्धिर्भूर्युच्चारक्रोधपानाशनेर्ष्यः ॥
सुप्तः पश्येत्कर्णिकारान् पलाशान् दिग्दाहोल्काविद्युदर्कानलांश्च ॥
तनूनि पिङ्गानि चलानि चैषां तन्वल्पपक्ष्माणि हिमप्रियाणि ।
क्रोधेन मद्येन रवेश्च भासा रागं व्रजन्त्याशु विलोचनानि ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| गन्धः | | वक्षः-पूतिः | |
| | | कक्षा ,, | |
| | | आस्य ,, | |
| | | शिर ,, | |
| | | शरीर-पूतिः | |
| | | अगुरुसमः | |
| मूत्रम् | | प्रभूतम् | |
| पुरीषम् | | ,, | |
| स्वेदः | समः | प्रभूतः दुगन्धः | अल्पः |
| तारका | विवृता | | |
| निमेषः | अधिकः | | अल्पः |
| | शीघ्रः | | मन्दः |

---

मध्यायुषो मध्यबलाः पण्डिताः क्लेशभीरवः ।
व्याघ्रर्क्षकपिमार्जारयक्षानूकाश्च पैत्तिकाः ॥

( अ० हृ० शा० अ० ३. श्लोक० ९०-९५ )

श्लेष्मा सोमः श्लेष्मलस्तेन सौम्यो गूढस्निग्धश्लिष्टसन्ध्यस्थिमांसः ।
क्षुत्तृड्घर्मक्लेशदुःखैरतप्तो बुद्धया युक्तः सात्विकः सत्यसन्धः ॥
प्रियङ्गुदूर्वाशरकाण्डशस्त्रगोरोचनापद्मसुवर्णवर्णः ।
प्रलम्बबाहुः पृथुपीनवक्षा महाललाटो घननीलकेशः ॥

# प्रकृतितः परीक्षा

## ( मनोगुणानुसारिणी )

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफप्रकृतेः |
|---|---|---|---|
| मनोदशातः | अल्पस्मृतिः | मध्यज्ञानम् | विद्यावत्त्वम् |
| | मत्सरता | ,, विज्ञानम् | ओजस्विता |
| | स्तेनता | मेधाविता | शान्तत्वम् |
| | कृतघ्नता | निपुणमतिः | कृतज्ञत्वम् |
| | अधृतिः | विगृह्यवक्तृत्वम् | धृतिमत्त्वम् |
| | अदृढसौहार्दम् | तेजस्विता | सहिष्णुता |
| | श्रुतग्राहिता | समितिषु दुर्निवारवीर्यता | अलोलुपता |
| | गन्धर्वचित्तता | अभिमानिता | चिरग्राहिता |
| | शीघ्ररागः | शूरता | दृढवैरम् |
| | शीघ्रविरागः | तीक्ष्णपराक्रमः | क्लेशक्षमता |
| | चलधृतिः | क्लेशासहिष्णुता | गुरूणां मानकरत्वम् |
| | ,, मतिः | बुद्धियुक्तता | दृढशास्त्रमतिः |
| | ,, स्वभावता | प्रभूतेर्ष्या | स्थिरमित्रत्वम् |
| | शीघ्रग्रहणशीलता | क्लेशभीरुता | दृढवैरम् |
| | शीघ्रविस्मरणता | पण्डितता | प्रच्छन्न वैरम् |
| | | | सत्यवादिता |
| | | | श्रद्धावत्त्वम् |
| | | | स्थूललक्षः |
| | | | सत्यसन्धा |
| | | | दीर्घदर्शिता |
| | | | अल्पेच्छा |
| | | | वदान्यता |
| | | | गम्भीरता |
| | | | सलज्जता |
| | | | सौम्यता |
| | | | सात्विकता |

Indira Gandhi National Centre for the Arts

---

मृद्वङ्गः समसुविभक्तचारुदेहो बह्वोजोरतिरसशुक्रपुत्रभृत्यः ।
धर्मात्मा वदति न निष्ठुरञ्च जातु प्रच्छन्नं वहति दृढं चिरञ्च वैरम् ॥
समदद्विरदेन्द्रतुल्ययातो जलदाम्भोधिमृदङ्गसिंहघोषः ।
स्मृतिमानभियोगवान्विनीतो न च बाल्येप्यतिरोदनो न लोलः ॥

| | वातप्रकृतेः | पित्तप्रकृतेः | कफकृतेः |
|---|---|---|---|
| उत्साहः | | | महान् |
| भयम् | अधिकम् | मध्यमम् | भयाभावः ( निर्भयः ) |
| शोकः | अधिकः | सामान्यः | अतिन्यूनः |
| | शीघ्रः | | अशोकः |
| अभिरुचिः | मृगयायाम् | माल्ये | तन्द्रायाम् |
| | इतिहासे | विलेपने | निद्रायाम् |
| | हासे | मण्डने | श्रुते |
| | विलासे | शीते | शास्त्रे |
| | कलहे | हिमे | उष्णे |
| | उद्याने | | संगीते |
| | गाने | | |
| | उष्णे | | |
| | विमर्दने | | |
| अनभिरुचिः | { शैत्ये<br>शीतले | उष्णे | शैत्ये |
| आकांक्षा | स्निग्धोष्णान्नपानस्य | शीतस्य | रूक्षस्य |
| प्रिया रसाः | मधुराम्ललवणाः | मधुरकषायतिक्ताः | कटुतिक्तकषायाः |
| असहिष्णुता | शीतस्य | ऊष्मणः | |

SANS
615.536
JAM

---

तिक्तं कषायं कटुकोष्णरूक्षमल्पं सभुङ्क्ते बलवांस्तथापि ।
रक्तान्तसुस्निग्धविशालदीर्घसुव्यक्तशुक्लासितपद्मलाक्षः ॥
अल्पव्याहारक्रोधपानाशनेहः प्राज्यायुर्वित्तो दीर्घदर्शी वदान्यः ।
श्राद्धो गम्भीरः स्थूललक्षी क्षमावानार्यो निद्रालुर्दीर्घसूत्रः कृतज्ञः ॥
ऋजुर्विपश्चित्सुभगः सुलज्जो भक्तो गुरूणां स्थिरसौहृदश्च ।
स्वप्ने सपद्मां सविहङ्गमालांस्तोयाशयान्पश्यति तोयदांश्च ॥
ब्रह्मरुद्रेन्द्रवरुणतार्क्ष्यहंसगजाधिपैः ।
श्लेष्मप्रकृतयस्तुल्यास्तथा सिंहाश्वगोवृषैः ॥

( अ० हृ० शा० अ० ३. श्लो० ९६-१०३ )



IGNCA RAR
ACC. No. R-264

## मानसप्रकृतीनां सामान्यलक्षणानि

| सात्त्विकप्रकृतेः | राजसप्रकृतेः | तामसप्रकृतेः |
|---|---|---|
| आनृशंस्यम् | अकारुण्यम् | विषादित्वम् |
| संविभागरुचिता | दुःखबहुलता | |
| तितिक्षा | अटनशीलता | |
| सत्यम् | आनृतिकत्वम् | |
| धर्मः | दम्भः | अधर्मशीलता |
| आस्तिक्यम् | मानः | नास्तिक्यम् |
| ज्ञानम् | हर्षः | अज्ञानम् |
| बुद्धिः | कामः | बुद्धेर्निरोधः |
| मेधा | क्रोधः | दुर्मेधस्त्वम् |
| स्मृतिः | अहङ्कारः | अकर्मशीलता |
| धृतिः | अधृतिः | निद्रालुत्वं च |
| अनभिषङ्गः | | |

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

---

**सत्त्वभेदाद्ब्राह्मादिभेदे प्रमाणानि**—(चरके) त्रिविधं खलु सत्त्वं-शुद्धं, राजसं, तामसमिति। तत्र शुद्धमदोषमाख्यातम्, कल्याणांशत्वात्। राजसं सदोषमाख्यातं रोषांशत्वात्, तथा तामसमपि सदोषमाख्यातं मोहांशत्वात्।

तेषान्तु त्रयाणामपि सत्त्वानामेकैकस्य भेदाग्रमपरिसंख्येयं तरतमयोगात्, शरीरयोनिविशेषेभ्यः, अन्योन्यानुविधानाच्चशरीरं सत्त्वमनुविधीयते, सत्त्वं च शरीरम्, तस्मात् कतिचित्सत्त्वभेदान् अनूकाभिनिर्देशेन निदर्शनार्थमनुव्याख्यास्यामः।

# मानसिकप्रकृतयः

## सात्त्विकप्रकृतीनां भेदाः

१. **ब्राह्मसत्त्वः**

- शुचिः[1]
- सत्याभिसन्धः
- जितात्मा
- संविभागी
- ज्ञान-सम्पन्नः
- विज्ञान-सम्पन्नः
- वचन-सम्पन्नः
- प्रतिवचन-सम्पन्नः
- स्मृतिमान्
- कामापेतः
- क्रोधापेतः
- लोभापेतः
- मानापेतः
- मोहापेतः
- ईर्ष्यापेतः
- हर्षापेतः
- अमर्षापेतः
- सर्वभूतेषु समः
- आस्तिकः
- वेदेष्वभ्यासशीलः
- गुरुपूजकः
- अतिथिप्रियः
- इज्या(याग)वान्

२. **आर्षसत्त्वः**

- इज्यापरः[2]
- अध्ययनपरः
- व्रतपरः
- होमपरः
- ब्रह्मचर्यपरः
- जयपरः
- अतिथिव्रतः
- उपशान्तमदः
- उपशान्तमानः
- उपशान्तरागः
- उपशान्तद्वेषः
- उपशान्तमोहः
- उपशान्तलोभः
- उपशान्तरोषः
- प्रतिभा-सम्पन्नः
- वचन- „
- विज्ञान- „
- उपधारणशक्ति-सम्पन्न
- ज्ञान-सम्पन्नः

३. **ऐन्द्रसत्त्वः**

- ऐश्वर्यवान्[3]
- आदेयवाक्यः
- यज्वा
- शूरः
- ओजस्वी
- तेजसोपेतः
- अक्लिष्टकर्मा
- दीर्घदर्शी
- धर्माभिरतः
- अर्थाभिरतः
- कामाभिरतः

---

१. तद् यथा—शुचिं सत्याभिसन्धं जितात्मानं संविभागिनं ज्ञानविज्ञानवचनप्रतिवचनशक्तिसम्पन्नं स्मृतिमन्तं कामक्रोधलोभमानमदमोहेर्ष्याहर्षापेतं समं सर्वभूतेषु ब्राह्मं विद्यात् ।

२. इज्याध्ययनव्रतहोमब्रह्मचर्यपरमतिथिव्रतमुपशान्तमदमानरागद्वेषलोभमोहरोषं प्रतिभावचनविज्ञानोपधारणशक्तिसम्पन्नमार्षं विद्यात् ।

३. ऐश्वर्यवन्तमादेयवाक्यं यज्वानं शूरमोजस्विनं तेजसोपेतमक्लिष्टकर्माणं दीर्घदर्शिनमर्थकामाभिरतमैन्द्रं विद्यात् ।

सततशास्त्रबुद्धिः

भृत्यानां भरणशीलः

माहात्म्यवान्

आज्ञावान्

**४. याम्यसत्त्वः**

लेखास्थवृत्तः[१]

प्राप्तकारी

असम्प्रहार्यः

उत्थानवान्

स्मृतिमान्

ऐश्वर्यलम्भी

व्यपगतरागः

व्यपगतेर्ष्यः

व्यपगतद्वेषः

व्यपगतमोहः

निर्भयः

शुचिः

**५. वारुणसत्त्वः**

शूरः[२]

धीरः

शुचिः

अशुचिद्वेषी

यज्वा

अम्भोविहाररतिः

अक्लिष्टकर्मा

स्थानकोपप्रसादः

शीतसेवी

सहिष्णुः

पिङ्गलः

हरिकेशः

प्रियवादी

**६. कौबेरसत्त्वः**

स्थान[३]–सम्पन्नः

मान– „

उपभोग– „

परिवार– „

धर्मार्थकामनित्यः

शुचिः

सुखविहारः

व्यक्तकोपः

व्यक्तप्रसादः

मध्यस्थः

सहिष्णुः

अर्थागमसञ्चयः

महाप्रसवशक्तिः

**७. गान्धर्वसत्त्वः**

प्रियनृत्यकुशलः[४]

प्रियगीतकुशलः

प्रियवादित्रकुशलः

प्रियोल्लापककुशलः

प्रियश्लोककुशलः

प्रियाख्यायिकाकुशलः

इतिहासकुशलः

पुराणकुशलः

गन्धनित्यः

माल्यनित्यः

अनुलेपननित्यः

वसननित्यः

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

---

१. लेखा( कर्तव्याकर्तव्यमर्यादा )स्थवृत्तं प्राप्तकारिणमसंप्रहार्यमुत्थानवन्तं स्मृतिमन्तमैश्वर्यालम्बिनं व्यपगतरागेर्ष्याद्वेषमोहं याम्यं विद्यात् ।

२. शूरं वीरं शुचिमशुचिद्वेषिणं यज्वानमम्भोविहाररतिमक्लिष्टकर्माणं स्थानकोपप्रसादं वारुणं विद्यात् ।

३. स्थानमानोपभोगपरिवारसम्पन्नं सुखविहारं धर्मार्थकामनित्यंशुचिं व्यक्तकोपप्रसादं कौबेरं विद्यात् ।

४. प्रियनृत्यगीतवादित्रोल्लापकं श्लोकाख्यायिकेतिहासपुराणेषु कुशलं गन्धमाल्यानुलेपनवसनस्त्रीविहारकामनित्यमनसूचकं गान्धर्वं विद्यात् ।

इत्येवं शुद्धस्य सत्त्वस्य सप्तविधं भेदांशं विद्यात् । कल्याणांशत्वात् । सत्त्वसंयोगात्तु ब्राह्ममत्यन्तशुद्धं व्यवस्येत् ।

स्त्रीनित्यः
विहारनित्यः
कामनित्यः
अनसूयकः

## राजसप्रकृतीनां भेदाः

**१. आसुरसत्त्वः**

शूरः[1]
चण्डः
असूयकः
ऐश्वर्यवान्
औपधिकः
रौद्रः
अनुक्रोशः
आत्मपूजकः
एकाशी
औदरिकः

**२. राक्षसत्त्वः**

अमर्षी[2]
अनुबन्धकोपः
छिद्रप्रहारी
क्रूरः
आहारातिमात्ररुचिः
आमिषप्रियतमः
स्वप्नबहुलः
आयासबहुलः
ईर्ष्युः
एकान्तग्राही
रौद्रः
असूयकः
धर्मबाह्यः
भृशमात्मस्तवः

**३. पैशाचसत्त्वः**

महाशनः[3]
स्त्रैणः
स्त्रीरहस्कामः
अशुचिः
शुचिद्वेषी
भीरुः
भीषयिता
विकृतविहारशीलः
विकृताहारशीलः
उच्छिष्टाहारः
तीक्ष्णः
साहसप्रियः
निर्लज्जः

**४. सार्पसत्त्वः**

कुद्धशूरः[4]
अक्रुद्धभीरुः
तीक्ष्णः
आयासबहुलः
संत्रस्तगोचरः
आहारपरः
विहारपरः
चण्डः
मायान्वितः
विहारचपलः
आचारचपलः

---

१. शूरं चण्डमसूयकमैश्वर्यवन्तमौपधिकं ( छलिनमित्यर्थः ) रौद्रमननुक्रोशमात्मपूजकमासुरं विद्यात् ।

२. अमर्षिणमनुबन्धकोपं छिद्रप्रहारिणं क्रूरमाहारातिमात्ररुचिमामिषप्रियतमं स्वप्नायासबहुलमीर्ष्युं राक्षसं विद्यात् ।

३. महालसं स्त्रैणं स्त्रीरहस्काममशुचिं शुचिद्वेषिणं भीरुं भीषयितारं विकृतविहाराहारशीलं पैशाचं विद्यात् ।

४. क्रुद्धशूरमक्रुद्धभीरुं तीक्ष्णमायासबहुलं संत्रस्तगोचरमाहारविहारपरं सार्पं विद्यात् ।



Indira Gandhi National Centre for the Arts

**५. प्रेतसत्त्वः**

आहारकामः[1]

अतिदुःखशीलः

अतिदुःखाचारः

अतिदुःखोपचारः

असूयकः

असंविभागी

अतिलोलुपः

अकर्मशीलः

अलसः

अदाता

**६. शाकुनसत्त्वः**

अनुषक्तकामः[2]

अजस्रमाहारपरः

अजस्रं विहारपरः

अनवस्थितः

अमर्षणः

असञ्चयः

प्रवृद्धकामसेवी

## तामसप्रकृतीनां भेदाः

**१. पाशवसत्त्वः**

निराकरिष्णुः[3]

अमेधाः

जुगुप्सिताचारः

जुगुप्सिताहारः

जुगुप्सितविहारः

मैथुनपरः

स्वप्नशीलः

दुर्मेधाः

मन्दः

स्वप्ने मैथुननित्यता

**२. मात्स्यसत्त्वः**

भीरुः[4]

अबुधः, मूर्खः

आहारलुब्धः

अनवस्थितः

**३. वानस्पत्यसत्त्वः**

अलसः[5]

केवलमाहारेऽभिनिविष्टः

सर्वबुद्ध्यङ्गहीनः

( ऊहापोहविचारस्मृत्यादिहीनः )

नित्यमेकस्थानरतिः

सत्त्ववर्जितः

धर्मवर्जितः

कामवर्जितः

अर्थवर्जितः

---

१. आहारकाममतिदुःखशीलाचारोपचारमसूयकमसंविभागिनमतिलोलुपमकर्मशीलं प्रैतं विद्यात् ।

२. अनुषक्तकाममजस्रमाहारविहारपरमनवस्थितममर्षिणमसञ्चयं शाकुनं विद्यात् ।

इत्येवं खलु राजसस्य सत्त्वस्य षड्विधं भेदांशं विद्याद्रोषांशत्वात् ।

३. निराकरिष्णुममेधसं जुगुप्सिताचाराहारविहारं मैथुनपरं स्वप्नशीलं पाशवं विद्यात् ।

४. भीरुमबुधमाहारलुब्धमनवस्थितमनुषक्तकामक्रोधंसरणशीलं तोयकामं मात्स्यं विद्यात् ।

५. अलसं केवलमभिविविष्टमाहारे सर्वबुद्ध्या हीनं वानस्पत्यं विद्यात् ।

इत्येवं खलु तामसस्य सत्त्वस्य त्रिविधं भेदांशं विद्यात् , मोहांशत्वात् ( च. शा. अ. ४।३६–५६ )

अनुषक्तकामः

~~अनुषक्त~~क्रोधः

सरलशीलः

तोयकामः

परस्पराभिमर्दः

---

प्रकृतिमिह नराणां भौतिकीं केचिदाहुः,
पवनदहनतोयैः कीर्तितास्तास्तु तिस्रः।
स्थिरविपुलशरीरः पार्थिवस्तु क्षमावान्,
शुचिरथ चिरजीवी नाभसः खैर्महद्भिः॥

शौचमास्तिक्यमभ्यासो वेदेषु गुरुपूजनम्।
प्रियातिथित्वमिज्या च ब्रह्मकायस्य लक्षणम्॥
माहात्म्यं शौर्यमाज्ञा च सततं शास्त्रबुद्धिता।
मर्त्यानां मरणश्चापि माहेन्द्रं कायलक्षणम्॥
शीतसेवासहिष्णुत्वं पैङ्गल्यं हरिकेशता।
प्रियवादित्वमित्येवं वारुणं कायलक्षणम्॥
मध्यस्थता सहिष्णुत्वमर्थस्यागमसंचयौ।
महाप्रसवशक्तित्वं कौबेरं कायलक्षणम्॥
गन्धमाल्यप्रियत्वञ्च नृत्यवादिप्रकामिता।
विहारशीलता चैवं गान्धर्वं कायलक्षणम्॥
प्राप्तकारी दृढोत्थानो निर्भयः स्मृतिमान् शुचिः।
रागमोहमदद्वेषैर्वर्जितो याम्यसत्त्ववान्॥
जपव्रतब्रह्मचर्यहोमाध्ययनसेविनम्।
ज्ञानविज्ञानसंपन्नं ऋषिसत्त्वं नरं विदुः॥
सप्तैते सात्त्विकाः काया राजसांश्च निबोध मे।
ऐश्वर्यवन्तं शूरञ्च रौद्रं चण्डमसूयकम्।
एकाशिनं चौदरिकमासुरं सत्त्वमीदृशम्॥
तीक्ष्णमायासिनं भीरुं चण्डं मायान्वितं तथा।
विहाराचारचपलं सर्पसत्त्वं विदुर्बुधाः॥
प्रवृद्धकामसेवी चाप्यजस्राहार एव च।
अमर्षणोऽनवस्थायी शाकुनं कायलक्षणम्॥
असंविभागमलसं दुःखशीलमसूयकम्।
लोलुपं चाप्यदातारं प्रेतसत्त्वं विदुर्नरम्॥
एकान्तग्राहिता रौद्रमसूया धर्मबाह्यता।
भृशमात्रं तमश्चापि राक्षसं कायलक्षणम्॥
उच्छिष्टाहारता तैक्ष्ण्यं साहसप्रियता तथा।

स्त्रीलोलुपत्वं नैर्लज्यं पैशाचं कायलक्षणम् ॥

षडेते राजसाः कायाः, तामसांश्च निबोध मे ॥

दुर्मेधस्त्वं मन्दता च स्वप्ने मैथुननित्यता ।

निराकरिष्णुता चैव विज्ञेया पाशवा गुणाः ॥

अनवस्थितता मौर्ख्यं भीरुत्वं सलिलार्थिता ।

परस्पराभिमर्दश्च मत्स्यसत्त्वस्य लक्षणम् ॥

एकस्थानरतिर्नित्यमाहारे केवले रतः ॥

वानस्पत्यो नरः सत्त्वधर्मकामार्थवर्जितः ॥

इत्येते त्रिविधाः कायाः प्रोक्ता वै तामसास्तथा ।

कायानां प्रकृतीर्ज्ञात्वा त्वनुरूपां क्रियां चरेत् ॥

( सु. शारीर. अ. ४ श्लो. ८७-९९ )

यथा वक्त्रं तथा वृत्तं यथा चक्षुस्तथा मनः ।

यथा स्वरस्तथा सारो यथा रूपं तथा गुणाः ॥

त्रिविधं सत्त्वमुद्दिष्टं कल्याणक्रोधमोहजम् ।

श्रेष्ठमध्याधमत्वञ्च तेषां प्रोक्तं यथा क्रमम् ॥

अष्ट सप्त त्रिधा चैषां क्रमाद् भेदः प्रवक्ष्यते ।

सत्त्वानां सत्त्वविज्ञानं हितमौषधकल्पने ॥

१ तपःसत्यदयाशौचदानशीलरतं समम् ।

ज्ञानविज्ञानसंपन्नं ब्राह्मं विद्याज्जितेन्द्रियम् ॥

२ प्रजावन्तं क्रियावन्तं धर्मशीलं जगत्प्रियम् ।

अनीर्ष्यमशठं प्राज्ञः प्राजापत्यं वदेच्छुचिम् ॥

३ शौचव्रतेज्याध्ययनब्रह्मचर्यदयापरम् ।

जितमानमदक्रोधं वक्तारं चार्षमादिशेत् ॥

४ त्रिवर्गनित्यं विद्वांसं शूरमक्लिष्टकारिणम् ।

प्राहुरैन्द्रं महाभागमधिष्ठातारमीश्वरम् ॥

५ त्यक्तदम्भभयक्रोधं प्राप्तकारिणमीश्वरम् ।

समं मित्रे च शत्रौ च याम्यं विद्यात्सुनिश्चितम् ॥

६ अशुचिर्विशुचिः शूरः क्षिप्रकोपप्रसादवान् ।

पुण्यशीलो महाभागो वारुणो वरुणप्रियः ॥

७ स्थानमानपरीचारधर्मकामार्थलोभिनम् ।

क्रोधप्रसादफलदं कौबेरं प्राहुरूर्जितम् ॥

८ श्लोकाख्यानेतिहासज्ञं गन्धमाल्याम्बरप्रियम् ।

नृत्तगीतोपहासज्ञं गान्धर्वं सुभगं विदुः ॥

ये चान्येपि शुभाभावाः शुद्धास्ते चापि सात्त्विकाः ।

एतत्कल्याणभूयिष्ठं शुद्धं सत्त्वमिहाष्टधा ॥

आरोग्यं प्रशमो रूपं ज्ञानविज्ञानमार्यता ।
दीर्घमायुः सुखात्यक्तं सामान्यं शुद्धलक्षणम् ॥

९ ईश्वरोऽसूयकश्चण्ड आत्मपूजोपधिप्रियः ।
सानुक्रोशमयो रौद्रो हन्ता शूरस्तथा सुरः ॥

१० क्रूरच्छिद्रप्रहारी च रोषेर्ष्यामर्षसंततः ।
वैरमांसाशनायासः कलहार्थी च राक्षसः ॥

११ शुचिद्विड्शुचिः क्रूरोऽभीरुर्भीषयिताऽऽविलः ।
मद्यमांसप्रियः शंकी पैशाचो बहुभोजनः ॥

१२ तीक्ष्णमायासबहुलं निद्रालुं बहुवैरिणम् ।
अक्रुद्धभीरुं स्त्रैणञ्च सार्पं नित्यौष्ठलेहिनम् ॥

१३ दानशय्यात्यलंकारपानभोजनमैथुनैः ।
नित्योपेतं प्रमुदितं याक्षं विद्यात् प्रभक्षणम् ॥

१४ अहंकृता महाहारा वैरिणो विकृताननाः ।
विरूपा विकृतात्मनो भूतसत्त्वा निशाप्रियाः ॥

१५ अमर्षिकुत्सिताहारवाग्यूनं नित्यशंकितम् ।
चलं दुर्मेधसं भीरुं शाकुनं विद्धयनौकसम् ॥

इत्येतद्राजसं सत्त्वं सप्तधा क्रोधकारितम् ।
व्यामिश्रगुणदोषञ्च रज एवोपलक्षयेत् ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

१६ आहारमैथुनपरं स्वप्नशीलममेधसम् ।
अथैवं पाशवं विद्यान्मृजालंकारवर्जितम् ॥

१७ भीरुमप्रज्ञमायूनं कामक्रोधवशं गतम् ।
हिंस्रमात्मपरं विद्यान्मात्स्यं सुप्रजसं शठम् ॥

१८ वधबन्धपरिक्लेशशीतवातातपक्षमम् ।
बुद्धियज्ञहीनमलसं वानस्पत्यं वदेदृजुम् ॥

इत्येतत्त्रिविधं सत्त्वं तामसं मोहसंभवम् ।
यच्चामेध्यमकल्याणं सर्वं तच्चापि तामसम् ॥

सत्त्वं प्रकाशकं विद्धि रजश्चापि प्रवर्तकम् ।
तमोनियामकं प्रोक्तमन्योन्यमिथुनप्रियम् ॥

यदा यच्चाधिकं यस्य स देही तेन भावितः ।
शुभाशुभान्याचरति फलं भुङ्क्ते तथाविधम् ॥

**धात्री—**

समानसत्त्वा बालानां तस्माद् धात्री प्रशस्यते ।
उद्वेगवित्रासकरी विपरीता न शस्यते ॥

न जीवन्त्यथ जीवन्ति कृच्छ्रा धात्रीविपर्यये ।
समानसत्त्वा बालानां पुष्टिरायुर्बलं सुखम् ॥

( का. सं. सू. अ. २८ )

## सारतः परीक्षा

| १. त्वक्सारः | त्वक्सारता |
|---|---|
| स्निग्ध[१] त्वक् ( त्वक्स्थो रसः ) | सुख- |
| श्लक्ष्ण " | सौभाग्य- |
| मृदु " | ऐश्वर्य- |
| प्रसन्न " | उपयोग- |
| सूक्ष्म " | बुद्धि- |
| अल्प लोमा त्वक् | विद्या- |
| गम्भीर " " | आरोग्य- |
| सुकुमार " " | प्रहर्षणानि |
| सप्रभेव च त्वक् | आयुष्यत्वं |
| | ( चाचष्टे ) |

| स्निग्ध- रक्तवर्ण- श्रीमद्- भ्राजिष्णु- | २. रक्तसारः | रक्तसारता |
|---|---|---|
| | कर्ण[२]: | सुखम् |
| | नेत्रः | उद्धताम् |
| | मुखः | मेधाम् |
| | जिह्वाः | मनस्विताम् |
| | नासाः | सौकुमार्यम् |
| | ओष्ठः | अनतिबलम् |
| | पाणितलः | अक्लेशसहिष्णुत्त्वम् |
| | पादतलः | उष्णासहिष्णुत्त्वम् |
| | नखः | चाचष्टे । |
| | ललाटः | |
| | मेहनः | |

### अथ सारप्रमाणानि—

सारतश्चेति साराण्यष्टौ बलमानविशेषज्ञानार्थमुपदिश्यन्ते; तद् यथा–त्वगुरक्तमांसमेदोस्थिमज्जशुक्रसत्त्वानीति ।

सारताः—

त्वगसृङ्मांसमेदोस्थिमज्जशुक्राणि धातवः ।
ओजः सत्त्वं च सर्वं च तत्सारन्तु निबोध मे ॥
त्वग्रोगरहितो भोगी प्रसन्नव्यञ्जनच्छविः ।
सद्यः क्षतप्ररोहश्च त्वक्सारः सुतनूरुहः ॥ इति ।

( का. सं. सू. स्था. अ. २८ )

१. तत्र स्निग्धश्लक्ष्णमृदुप्रसन्नसूक्ष्माल्पगम्भीरसुकुमारलोमा सप्रभेव चत्वक्त्वक्साराणां; सा सारता सुखसौभाग्यैश्वर्योपभोगबुद्धिविद्यारोग्यप्रहर्षणान्यायुश्चानित्वरमाचष्टे ।

२. कर्णाक्षिजिह्वानासौष्ठपाणिपादतलनखललाटमेहनं स्निग्धरक्तवर्णं श्रीमद्भ्राजिष्णु रक्तसाराणां सा सारता सुखमुदग्रतां मेधां मनस्वित्वं सौकुमार्यमनतिबलमक्लेशसहिष्णुत्वमुष्णासहिष्णुत्वञ्चाचष्टे ।

| ३. **मांससारः** | | **मांससारता** |
|---|---|---|
| स्थिर-गुरु-शुभ-मांसोपचित- | शंख[१]ः | क्षमाम् |
| | ललाटः | धृतिम् |
| | कृकाटिकाः | अलौल्यम् |
| | नेत्रः | वित्तम् |
| | गण्डः | विद्याम् |
| | हनुः | सुखम् |
| | ग्रीवाः | आर्जवम् |
| | स्कंधः | आरोग्यम् |
| | उदरः | बलम् |
| | कक्षाः | आयुश्च दीर्घम् |
| | वक्षाः | आचष्टे । |
| | पाणिः | |
| | पादः | |
| | सन्धिः | |

| ४. **मेदः सारः** | **मेदः सारता** |
|---|---|
| विशेषतः स्निग्ध–वर्णः[२] | वित्त- |
| „ „ स्वरः | ऐश्वर्य- |
| „ „ नेत्रः | सुख- |
| „ „ केशः | उपयोग- |
| „ „ लोमः | प्रदानानि |
| „ „ नखः | आर्जवम् |
| „ „ दन्तः | सुकुमारोपचारताम् |
| „ „ ओष्ठः | चाचष्टे । |
| „ „ मूत्रः | |
| „ „ पुरीषः | |
| „ „ स्निग्धस्वेदः | |
| „ „ बृहच्छरीरः | |
| „ „ आयाससहिष्णुः | |

---

१. शङ्खललाटकृकाटिकाक्षिगण्डहनुग्रीवास्कन्धोदरकक्षावक्षःपाणिपादसन्धयः स्थिरगुरुशुभमांसोपचिता मांस साराणां सा सारता क्षमां धृतिमलौल्यं वित्तं विद्यां सुखमार्जवमारोग्यं बलमायुश्च दीर्घमाचष्टे ।

२. वर्णस्वरनेत्रकेशलोमनखदन्तौष्ठमूत्रपुरीषेषु विशेषतः स्नेहो मेदःसाराणां सा सारता वित्तैश्वर्यसुखोपभोगप्रदानान्यार्जवं सुकुमारोपचारताञ्चाचष्टे ।

| ५. **अस्थिसारवान्** | **अस्थिसाराः** |
|---|---|
| स्थूल-पार्ष्णिः[1] | महोत्साहाः |
| ,, गुल्फः | क्रियावन्तः |
| ,, जानुः | क्लेशसहाः |
| ,, अरत्निः | सारशरीराः |
| ,, जत्रु | स्थिरशरीराः |
| ,, चिबुकः | आयुष्मन्तश्च |
| ,, शिरः | |
| ,, पर्वः | |
| ,, अस्थिः | |
| ,, नखः | |
| ,, दन्तः | |

| ६. **मज्जसाराः** | **मज्जसाराः** |
|---|---|
| मृद्वङ्गाः[2] | दीर्घायुषः |
| बलवन्तः | बलवन्तः |
| स्निग्धवर्णाः | श्रुतभाजः |
| स्निग्धस्वराः | वित्तभाजः |
| स्थूलसन्धयः | विज्ञानभाजः |
| दीर्घसन्धयः | अपत्यभाजः |
| वृत्तसन्धयः | सम्मानभाजश्च । |
| गम्भीरस्वराः | |
| सौभाग्योपपन्नाः | |
| महानेत्राः | |

| ७. **शुक्रसाराः** | **शुक्रसाराः** |
|---|---|
| सौम्याः[3] | स्त्रीप्रियाः |
| सौम्यप्रेक्षिणः | स्त्र्युपभोगाः |
| क्षीरपूर्णलोचना इव | बलवन्तः |
| प्रहर्षबहुलाः | सुखभाजः |

---

१. पार्ष्णिगुल्फजान्वरत्निजत्रुचिबुकशिरःपर्वस्थूलाः स्थूलास्थिनखदन्ताश्चास्थिसाराः, ते महोत्साहाः क्रियावन्तः क्लेशसहाः सारस्थिरशरीरा भवन्त्यायुष्मन्तश्च ।

२. तन्वङ्गा बलवन्तः स्निग्धवर्णस्वराः स्थूलदीर्घवृत्तसन्धयश्च मज्जसारास्ते दीर्घायुषो बलवन्तः श्रुतविज्ञानवित्तापत्यसंमानभाजश्च भवन्ति ।

३. सौम्याः सौम्यप्रेक्षिणः क्षीरपूर्णलोचना इव प्रहर्षबहुलाः स्निग्धवृत्तसारसमसंहतशिखरिदशनाःप्र सन्नस्निग्धवर्णस्वरा भ्राजिष्णवो महास्फिचश्च शुक्रसाराः, स्त्रीप्रियाः ते प्रियोपभोगाः बलवन्तः सुखैश्वर्यारोग्यवित्तसंमानापत्यभाजश्च भवन्ति ।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्निग्धदशनाः

वृत्त ,,

सार ,,

सम ,,

सहंत ,,

शिखर ,,

प्रसन्नवर्णाः

स्निग्धवर्णाः

प्रसन्नस्वराः

स्निग्धस्वराः

भ्राजिष्णवः

महास्फिचः

८. **सत्त्वसाराः**

स्मृतिमन्तः[१]

भक्तिमन्तः

कृतज्ञाः

प्राज्ञाः

शुचयः

महोत्साहाः

दक्षाः

धीराः

समरविक्रान्तयोधिनः

त्यक्तविषादाः

सुव्यवस्थितगतयः

,, बुद्धयः

,, गम्भीरचेष्टाः

कल्याणाभिनिवेशिनः

**सर्वसारोपेताः पुरुषाः**

अतिबलाः[२]

परमसुखयुक्ताः

वित्तभाजः

ऐश्वर्यभाजः

आरोग्यभाजः

सम्मानभाजः

अपत्यभाजः

Indira Gandhi National Centre for the Arts

---

१. स्मृतिमन्तो भक्तिमन्तः कृतज्ञाः प्राज्ञाः शुचयो महोत्साहा दक्षाधीराः समरविक्रान्तयोधिनस्त्यक्तविषादाः स्वव्यस्थितगतिगम्भीरबुद्धिचेष्टाः कल्याणाभिनिवेशिनश्च सत्त्वसाराः, तेषां स्वलक्षणैरेव गुणा व्याख्याताः ।

२. तत्र सर्वैः सारैरुपेताः पुरुषा भवन्त्यतिबलाः परमगौरवयुक्ताः क्लेशसहाः सर्वारम्भेष्वात्मनि जातप्रत्ययाः कल्याणाभिनिवेशिनः स्थिरसमाहितशरीराः सुसमाहितगतयः सानुनादस्निग्धगम्भीरमहास्वराः सुखैश्वर्यवित्तोपभोगसंमानभाजो मन्दरजसो मन्दविकाराः प्रायस्तुल्यगुणविस्तीर्णापत्याश्चिरजीविनश्च भवन्ति। ( च. वि. अ. ८ )

क्लेशसहाः

सर्वारम्भेषु आत्मनि जातप्रत्ययाः

कल्याणाभिनिवेशिनः

स्थिरशरीराः

समाहितशरीराः

सुसमाहितगतयः

सानुनादस्वराः

स्निग्धस्वराः

गम्भीरस्वराः

महास्वराः

सुखभाजः

ऐश्वर्यभाजः

वित्तभाजः

उपभोगभाजः

सम्मानभाजः

मन्दजरसः

मन्दविकाराः

प्रायस्तुल्यगुणविस्तीर्णापत्याः

चिरजीविनः

**अन्ये[1] त्वसाराः**

Indira Gandhi National Centre for the Arts

---

१. अतो विपरीतास्त्वसाराः।

मध्यानां मध्यैर्गुणविशेषैर्विशेषा व्याख्याता भवन्ति । ( च. वि. अ. ८, सू. १०१-११ )

स्मृतिभक्तिप्रज्ञाशौर्यशौचोपेतं कल्याणाभिनिवेशं सत्त्वसारं विद्यात् । स्निग्धसंहतश्वेतास्थिदन्तनखं बहुलकामप्रजं शुक्रेण । अकृशमुत्तमबलं स्निग्धगम्भीरस्वरं सौभाग्योपपन्नं महानेत्रं च मज्ज्ञा । महाशिरः स्कन्धं दृढदन्तहन्वस्थिनखमस्थिभिः । स्निग्धमूत्रस्वेदस्वरं बृहच्छरीरमायाससहिष्णुं मेदसा । अच्छिद्रगात्रं गूढास्थिसन्धिं मांसोपचितं च मांसेन । स्निग्धताम्रनखनयनतालुजिह्वौष्ठपाणिपादतलं रक्तेन । सुप्रसन्नमृदुत्वग्रोमाणं त्वक्सारं विद्यादिति । एषां पूर्वं पूर्वं प्रधानमायुः—सौभाग्ययोरिति ॥ ( सु. सू. अ. ३५ )

## संहननतः परीक्षा[1]

( समसुविभक्तास्थि, सुबद्धसन्धि सुनिविष्टमांसशोणितं सुसंहतं शरीरम् । )

सुसंहतशरीरः…………बलवान्

मध्यसंहतशरीरः………मध्यबलः

अल्पसंहतशरीरः………अल्पबलः

## प्रमाणतः परीक्षा

तत्रायुर्बलमोजः सुखमैश्वर्यं वित्तमिष्टाश्चापरे भावा भवन्त्यायत्ताः प्रमाणवति शरीरे; विपर्ययस्त्वतो हीनेऽधिके वा। शरीरमङ्गुलिपर्वाणि चतुरशीतिः। तदायामविस्तारसमं समुच्यते। ( सुश्रुते सविंशमङ्गुलिशतं पुरुषमानमुक्तम् ) उत्सेधविस्तारायामैः पृथक्त्वेन अङ्गावयवानां मानम्—

( यथास्वेनाङ्गुलिप्रमाणेन )

| अङ्गावयवाः | उत्सेधः | विस्तारः | आयामः | परिणाहः |
|---|---|---|---|---|
| पादौ | ४ | ६ | १४ | |
| जङ्घे (जान्वधस्तात्) | | | १८ | १६ |
| जानुनी | | ४ | | १६ |
| ऊरू | | | १८ | ३० |
| वृषणौ | | | ६ | १८ |
| शेफः | | | ६ | ५ |
| भगः | | | | १२ |
| कटी | | १६ | | |
| वस्तिशिरः | | १० | | |
| उदरम् | | १० | १२ | |
| पार्श्वे | | १० | १२ | |
| स्तनान्तरम् | | १२ | | |
| स्तनपर्यन्तम् | | २ | | |
| उरस् उरः | १२ | २४ | | |

१. **संहनतश्चेति**—संहननम्, सङ्घातः, संयोजनमित्येकोर्थः। तत्र समसुविभक्तास्थिसुसम्बद्धसन्धि सुनिविष्टमांस-शोणितं सुसंहतं शरीरमित्युच्यते। तत्र सुसंहतशरीराः पुरुषा बलवन्तः, विपर्ययेणाल्पबलाः प्रवरावरमध्यत्वात्संहननस्य मध्यबला भवन्ति।

**प्रमाणतश्चेति**—शरीरप्रमाणं पुनर्यथास्वेनाङ्गुलिप्रमाणेनोपदिश्यते, उत्सेध वस्तारायामैर्यथाक्रमम्।

| अङ्गावयवाः | उत्सेधः | विस्तारः | आयामः | परिणाहः |
|---|---|---|---|---|
| हृदयम् (द्व्यंगुलम्) | | | | |
| स्कन्धौ | | ८ | | |
| अंसौ | | ६ | | |
| प्रबाहू (अंसादर्वाक् कफोणिपर्यन्तम्) | | | १५ | |
| प्रपाणी (कफोण्यधस्तात्) | | | १५ | |
| हस्तौ | | | १२ | |
| कक्षौ | | ८ | | |
| त्रिकम् | १२ | | | |
| पृष्ठम् | १८ | | | |
| शिरोधरा | ४ | | | २२ |
| आननम् | १२ | | | २४ |
| आस्यम् | | ५ | | |
| चिबुकम् | | ४ | | |
| ओष्ठौ | | ४ | | |
| कर्णौ | | ४ | | |
| अक्षिमध्यम् | | ४ | | |
| नासिका | | ४ | | |
| ललाटम् | | ४ | | |
| शिरः | १६ | | | ३२ |

तत्र पादौ चत्वारि षट् चतुर्दशचाङ्गुलानि, जङ्घे त्वष्टादशाङ्गुले षोडशाङ्गुलिपरिक्षेपे, जानुनी चतुरङ्गुले षोडशांगुलिपरिक्षेपे, त्रिंशदङ्गुलपरिक्षेपावष्टादशाङ्गुलौ ऊरू, षडङ्गुलदीर्घौ वृषणावष्टाङ्गुलपरिणाहौ, शेफः षडङ्गुलदीर्घं पञ्चाङ्गुलपरिणाहं द्वादशाङ्गुलपरिणाहो भगः, षोडशाङ्गुलविस्तारा कटी, दशाङ्गुलं बस्तिशिरः, दशाङ्गुलविस्तारं द्वादशाङ्गुलमुदरम्, दशाङ्गुलविस्तीर्णे द्वादशाङ्गुलायामे पार्श्वे, द्वादशाङ्गुलं स्तनान्तरम्, द्व्यङ्गुलं स्तनपर्यन्तम्, चतुर्विंशत्यङ्गुलविशालं द्वादशाङ्गुलोत्सेधमुरः, द्व्यङ्गुलं हृदयम्, अष्टाङ्गुलौ स्कन्धौ, षडङ्गुलावंसौ, षोडशाङ्गुलौ प्रबाहू, पञ्चदशाङ्गुलौ प्रपाणी, हस्तौ दशाङ्गुलौ,

कक्षावष्टाङ्गुलौ, त्रिकं द्वादशाङ्गुलोत्सेधम्, अष्टादशाङ्गुलोत्सेधं पृष्ठम्, चतुरङ्गुलोत्सेधा द्वाविंशत्यङ्गुलपरिणाहा शिरोधरा, द्वादशाङ्गुलोत्सेधं चतुर्विंशत्यङ्गुलपरिणाहमाननम्, पञ्चाङ्गुलमास्यम्, चिबुकौष्ठकर्णाक्षिमध्यनासिकाललाटं चतुरङ्गुलं षोडशाङ्गुलोत्सेधं द्वात्रिंशदङ्गुलपरिणाहं शिरः, इति पृथक्त्वेनाङ्गावयवानां मानमुक्तम्। केवलं पुनः शरीरमङ्गुलिपर्वाणि चतुरशीतिः। तदायामविस्तारसमं समुच्यते। तत्रायुर्बलमोजः सुखमैश्वर्यं वित्तमिष्टाश्चापरे भावा भवन्त्यायत्ताः प्रमाणवति शरीरे। विपर्ययस्त्वतो हीनेऽधिके वा।

आतुरमुपक्रममाणेन भिषजाऽऽयुरादावेव परीक्षितव्यम्। सत्यायुषि व्याध्यृत्वग्निवयोदेहबलसत्त्वसात्म्यप्रकृतिभेषजदेशान् परीक्षेत।

तत्र महापाणिपादपार्श्वपृष्ठस्तनाग्रदशनवदनस्कन्धललाटं दीर्घांगुलिपर्वोच्छ्वासप्रेक्षणबाहुं विस्तीर्णभ्रूस्तनान्तरोरस्कं ह्रस्वजङ्घामेढ्रग्रीवं गम्भीरसत्त्वस्वरनाभिमनुच्चैर्बद्धस्तनमुपचितमहारोमशकर्णं पश्चान्मस्तिष्कं स्नातानुलिप्तं मूर्धानुपूर्व्या विशुष्यमाणशरीरं पश्चाच्च विशुष्यमाणहृदयं पुरुषं जानीयाद्दीर्घायुः खल्वयमिति। तमेकान्तेनोपक्रमेत्। एभिर्लक्षणैर्विपरीतैरल्पायुः; मिश्रैर्मध्यमायुरिति॥ भवन्ति चात्र—

गूढसन्धिसिरास्नायुः संहताताङ्गः स्थिरेन्द्रियः।
उत्तरोत्तरसुक्षेत्रो यः स दीर्घायुरुच्यते॥
गर्भात्प्रभृत्यरोगो यः शनैः समुपचीयते।
शरीरज्ञानविज्ञानैः स दीर्घायुः समासतः॥
मध्यमस्यायुषो ज्ञानमत ऊर्ध्वं निबोध मे।
अधस्तादक्षयोर्यस्य लेखाः स्युर्व्यक्तमायताः॥
द्वे वा तिस्रोऽधिका वाऽपि पादौ कर्णौ च मांसलौ।
नासाग्रमूर्ध्वं च भवेदूर्ध्वं लेखाश्च पृष्ठतः॥
यस्य स्युस्तस्य परममायुर्भवति सप्ततिः।
जघन्यस्यायुषो ज्ञानमत ऊर्ध्वं निबोध मे॥
ह्रस्वानि यस्य पर्वाणि सुमहच्चापि मेहनम्।
तथोरस्यवलीढानि न च स्यात् पृष्ठमायतम्॥
ऊर्ध्वं च श्रवणौ स्थानान्नासा चोच्चा शरीरिणः।
हसतो जल्पतो वापि दन्तमांसं प्रदृश्यते।
प्रेक्षते यश्च विभ्रान्तं स जीवेत्पञ्चविंशतिम्॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अथ पुनरायुषो विज्ञानार्थमङ्गप्रत्यङ्गप्रमाणसारानुपदेक्ष्यामः। तत्राङ्गान्यन्तराधिसक्थिबाहुशिरांसि, तदवयवाः प्रत्यङ्गानीति। तत्र स्वैरङ्गुलैः पादाङ्गुष्ठप्रदेशिन्यौ द्व्यङ्गुलायते। प्रदेशिन्यास्तु मध्यमानामिकाकनिष्ठिका यथोत्तरं पञ्चमभागहीनाः। चतुरङ्गुलायते पञ्चाङ्गुलविस्तृते प्रपदपादतले। पञ्चचतुरङ्गुलायतविस्तृता पार्ष्णिः। चतुर्दशाङ्गुलायतः पादः। चतुर्दशाङ्गुलपरिणाहानि पादगुल्फजङ्घाजानुमध्यानि। अष्टादशाङ्गुला जङ्घा। जानूपरिष्टाच्च द्वात्रिंशदंगुलमेवं पञ्चाशत्। जङ्घायामसमावूरू। द्व्यङ्गुलानि वृषणचिबुकदशननासापुटभागकर्णमूलभ्रूनयनान्तराणि। चतुरङ्गुलानि मेहनवदनान्तरनासाकर्णललाटग्रीवोच्छ्रायदृष्ट्यन्तराणि। द्वादशाङ्गुलानि भगविस्तारमेहननाभिहृदयग्रीवास्तनान्तरमुखायाममणिबन्धप्रकोष्ठस्थौल्यानि। इन्द्रवस्तिपरिणाहांसपीठकूर्परान्तरायामः षोडशाङ्गुलः। चतुर्विंशत्यङ्गुलो हस्तः। द्वात्रिंशदङ्गुलपरिमाणौ भुजौ। द्वात्रिंशत्परिणाहावूरु। मणिबन्धकूर्परान्तरं षोडशाङ्गुलम्। तलं षट्चतुरङ्गुलायामविस्तारम्। अङ्गुष्ठमूलप्रदेशिनीश्रवणापाङ्गान्तरमध्यमाङ्गुल्यौ पञ्चाङ्गुले। अर्धपञ्चाङ्गुले प्रदेशिन्यनामिके। सार्धत्र्यङ्गुलौ कनिष्ठाङ्गुष्ठौ। चतुर्विंशतिविस्तारपरिणाहं मुख-

ग्रीवम् । त्रिभागाङ्गुलविस्तारा नासापुटमर्यादा । नयनत्रिभागपरिणाहा तारका । नवमस्तारकांशो दृष्टिः । केशान्तमस्तकान्तरमेकादशाङ्गुलम् । मस्तकादवटुकेशान्तो दशाङ्गुलः । कर्णावट्वन्तरं चतुर्दशाङ्गुलम् । पुरुषोरःप्रमाणविस्तीर्णा स्त्रीश्रोणिः । अष्टादशाङ्गुलविस्तारमुरः । तत्प्रमाणा पुरुषस्य कटी । सविंशमङ्गुलशतं पुरुषायाम इति ॥ ( सु. सू. अ. ३५ )

'सविंशमङ्गुलशतं पुरुषायाम इति पञ्चाङ्गुलायामा पार्ष्णिः, जङ्घा चतुर्विंशत्यङ्गुला, जानु चतुरङ्गुलम्, ऊरुश्चतुर्विंशत्यङ्गुलः, मेहननाभ्योरन्तरं द्वादशाङ्गुलं, नाभिहृदयान्तरं तथा ग्रीवाहृदयान्तरं प्रत्येकं द्वादशाङ्गुलम्, ग्रीवा चतुरङ्गुलायामा, मुखं द्वादशाङ्गुलायामं, तथा केशान्तचूडास्थानरूपमस्तकान्तरमेकादशाङ्गुलमेवं सविंशमङ्गुलशतमायामः पुरुषस्य ।' इति तत्रैव चक्रः ।

कृते च नामकर्मणि कुमारं परीक्षितुमुपक्रमेतायुषः प्रमाणज्ञानहेतोः । तत्रेमान्यायुष्मतां कुमाराणां लक्षणानि भवन्ति । तद्यथा—एकैकजा मृदवोल्पाः स्निग्धाः सुबद्धमूलाः कृष्णाः केशाः प्रशस्यन्ते । स्थिरा बहलात्वक् । प्रकृत्याकृतिसंपन्नमीषत्प्रमाणातिवृत्तमनुरूपमातपत्रोपमं शिरः । दृढं व्यूढं समं सुश्लिष्टशङ्खसन्ध्यूर्ध्वव्यञ्जनसम्पन्नमुपचितं बलिनमर्धचन्द्राकृति ललाटम् । बहलौ विपुलसमपीठौ समौ नीचैर्वृद्धौ पृष्ठतोवनतौ सुश्लिष्टकर्णपुत्रकौ महाच्छिद्रौ कर्णौ । ईषत्प्रलम्बिन्यावसंगते समे संहते महत्यौ भ्रुवौ । समे समाहितदर्शने व्यक्तभागविभागे बलवती तेजसोपपन्ने स्वङ्गापाङ्गे चक्षुषी । ऋज्वी महोच्छ्वासा वंशसंपन्नेषदवनताग्रा नासिका । महदृजुसुनिविष्टदन्तमास्यम् । आयामविस्तारोपपन्ना श्लक्ष्णा तन्वी प्रकृतिवर्णयुक्ता जिह्वा । श्लक्ष्णं युक्तोपचयमूष्मोपपन्नं रक्तं तालु । महान् अदीनः स्निग्धोनुनादी गम्भीरसमुत्थो धीरः स्वरः । नातिस्थूलौ नातिकृशौ विस्तारोपन्नावास्यप्रच्छादनौ रक्तावोष्ठौ । महत्यौ हनू । वृत्ता नातिमहती ग्रीवा । व्यूढमुपचितमुरः । गूढं जत्रु पृष्ठवंश च । विप्रकृष्टान्तरौ स्तनौ । अंसपातिनी स्थिरे पार्श्वे । वृत्तपरिपूर्णायतौ बाहू सक्थिनी अङ्गुलयश्च । महदुपचितं पाणिपादम् । स्थिरा वृत्ताः स्निग्धास्ताम्रास्तुङ्गाः कूर्माकाराः करजाः । प्रदक्षिणावर्तासोत्सङ्गा च नाभिः । उरस्त्रिभागहीना समा समुपचितमांसा कटी । वृत्तौ स्थिरोपचितमांसौ नात्युन्नतौ नात्यवनतौ स्फिचौ, अनुवृत्तावुपचययुक्तावूरू । नात्युपचिते नात्यपचिते एणीपदे प्रगूढसिरास्थिसन्धी जङ्घे । नात्युपचितौ नात्यपचितौ गुल्फौ । पूर्वोपदिष्टगुणौ पादौ कूर्माकारौ । प्रकृतियुक्तानि वातमूत्रपुरीषाणि तथा स्वप्नजागरणायासस्मितरुदितस्तनग्रहणानि । यच्च किंचिदन्यदप्यनुक्तमस्ति तदपि सर्वं प्रकृतियुक्तमिष्टम् । विपरीतं पुनरनिष्टम् । इति दीर्घायुर्लक्षणानि । (च.शा.अ.८ सू.५२)

### काश्यपसंहितायां विशेषः—

स्निग्धतनुश्लक्ष्णताम्रा नखा अधिपत्याय भवन्ति । स्थूला आचार्याणाम् । राजीमन्तो दीर्घाश्चायुष्मताम् । निम्नशुक्तितुषाकृतयो दरिद्राणाम् । रूक्षा दुःखभागिनाम् । पुष्पिता लुण्ठानाम् । श्वेता मण्डला अनायुषाम् । स्फुटिता अस्वतन्त्राणाम् । विवर्णा व्यसनिनाम् । समुन्नता निपिण्डान्ता अल्पाः सुखभागिनाम् । विपुलैर्नखैर्मध्यत्वमाह, स्थूलाः श्वेता विषमाश्च प्रव्राजयन्ति ।

पादैः पीनैः सुप्रतिष्ठितैरुर्ध्वलेखैरायुष्मन्तो धनवन्तोधिपतयः । स्वस्तिकलाङ्गलकमलशङ्खचक्रहयगजरथप्रहरण मङ्गलाङ्कितै राजानः । ताम्रैः स्निग्धैः सुभगाः । उत्कु ( त्क ) टकैर्मध्यधनायुषः । श्वेतैरधना अलेखैः परकर्मकराः । बहुलेखैः रोगिणः । सुवृत्तश्लक्ष्णपार्ष्णिभिः सर्वगुणोपपन्ना भवन्ति । हीनपार्ष्णिभिरनायुषः प्रजाहीनाः । चिपिटा पारदारिकाः ।

अङ्गुलिनखपादैर्दीर्घैर्दीर्घायुषो ह्रस्वैर्ह्रस्वायुषः । अङ्गुलीभिर्धनाभिर्भाग्यवन्तः । गूढपर्वाभिर्भोगिनः । स्थूलपर्वाभिराचार्याः । लोमशाभिरधनाः ।

खरपरुषतनुविषमस्फुटितमलिनापार्ष्णिरप्रशस्ता ।

उत्तरपादमुन्नतमसिरमलोमकं प्रशस्यते । विषमं विपरीतं च तस्कराणाम् ।

गुल्फौ गूढावलोमसिरावल्यौ प्रशस्तौ । धननाशायोल्बणौ, विपुलौ परिक्लेशाय ।

प्रजङ्घा तन्वी प्रशस्यते । स्थूला पतिपुत्रद्रव्यसुखक्षयकरी, स्तेनाय च ।

जङ्घे चानुद्बद्धे असिरे अलोमिके प्रशस्येते । स्थूलशुष्कशिरालोमशे विपरीते वैधव्यकरी ।

जानुनी च गूढे धन्ये ।

ऊरू मांसोपचितौ गूढसिरौ श्लक्ष्णौ प्रशस्येते ।

स्फिचौ निर्वृत्तावलम्बौ निर्व्रणावलोमशौ अविषमौ प्रशस्येते । शुष्कावनपत्यानाम् । लम्बौ प्रधाननाशाय । महान्तौ पौंश्चल्याय । अल्पकौ शीलवताम् ।

ककुन्दरौ ( नितम्बकूपकौ ) गम्भीरावलोमशौ प्रविभक्तौ समौ प्रशस्येते । लोमशौ प्रव्रज्यायै । प्रदक्षिणावर्तौ तु धन्यौ । विपुलौ दीर्घायुषाम् । श्लिष्टौ अनायुषाम् ।

जघनमुरसा तुल्यं प्रशस्तम् । (इत्येके) । कुमाराणामुरस्तु विशालतरम् । जघनन्तु कुमारीणाम् । नतु मध्याय कल्पते ।

वृषणौ प्रलम्बौ बृहतौ गौरस्य । कृष्णौ कृष्णस्य । गौरौ रक्तस्य । श्यामौ श्यामस्य । रक्तौ लोमशौ मध्यौ स्मृतौ। पीनौ प्रशस्येते । विपरीतौ दौर्भाग्यपुंस्त्वप्रजाहानिकरौ । स्वल्पावनायुषाम् । दुःखायचैके । गोखरहयाजाविकाकृती तु सुभगानामायुष्मताञ्च विज्ञेयौ ।

प्रजननं मृदु दीर्घमुच्छ्रितं बृहत्ताम्रनिर्वृत्तमणि महाकोशं महास्रोतः प्रशस्यते । तनु ह्रस्वं लम्बि विकोशं श्वेतश्याव विसृतं वामावृत्तमप्रशस्तम् ।

मूत्रमनाविद्धमतनुकमनल्पमृजुवेगं प्रशस्यते । तद्विपरीतमतिगन्धि सवेदनमत्युष्णं विवर्णमनिमित्तकालमशब्दम-प्रशस्तम् । कन्यकानाञ्च स्फालितमूत्रत्वमुभयोर्वानपत्यकरम् ।

योनिः शकटाकृतिरपत्यलाभाय । पीना सौभाग्याय । लम्बाऽपत्यवधाय । मण्डला व्यभिचाराय । उत्क्षिप्ताऽन-पत्याय । सूचीमुखी दौर्भाग्याय । भृशविवृतसंवृतशुष्का विषमा लम्बा विलिंगा क्लेशलाभाय । मध्यनिविडा कन्याप्रजननाय । उन्नता रमणीया मांसला पुत्रजन्मने । व्यञ्जनवती च धन्या । अतिलोमशा वैधव्यकरी । व्यञ्जनहीना त्वयशसे । पिप्लुमद्व-सावती व्यभिचारप्रवज्यायै ।

तथैव रोमराज्युभयतो मध्यमागता नातिघना प्रशस्यते । वैधव्यायातिस्थूला । अतिस्थूलघनलोभा पौंश्चल्याय । अधोजाता दौर्भाग्याय । नाभियतिवृत्ता मध्यत्वाय ।

कुक्षी समुन्नतौ प्रशस्येते । लोमशौ प्रव्रज्यायै । सिरालौ कुभोजनाय । निम्नौ दारिद्र्याय । समौ मध्यत्वाय । दक्षिणोन्नतौ पुत्रजन्मने । वामोन्नतौ विपरीतौ ।

ईषदुन्नतमुदरमशिथिलमकठिनमविपुलं प्रशस्यते । दारिद्र्याय शुष्कम् । उन्नतं भोगाय । विशालविषमं विषम-शीलभोगाय । भृशशुष्कमनपत्यम् । स्त्रियाश्चाद्यस्तादुपचितमतिविपुलमसिरमवलिकमनायुषे ।

मध्यं नाभेरुपरिष्टादनायुषे । एकवलिकं धन्यम् । द्विवलिकं बुद्धिलाभाय । त्रिवलिकं सौभाग्याय । चतुर्वलिकं प्रजायुषे । बहुवलिकमधन्यमनायुषे भवत्युदरम् ।

नाभिः गंभीरा प्रदक्षिणा वृत्तोत्संगिनी लोमसिरावर्तवर्जिता प्रशस्यते । गर्ताकृतिरनुन्नता सुखदुःखकरी । विषयोन्नता अनायुष्या स्वल्पाकृतिरनपत्या । विदेशस्था प्रव्राजयति । बृहती गम्भीरोन्नताःधिपत्याय ।

नाभ्या पायुर्व्याख्यातः ।

पार्श्वे वृत्ते मांसले स्निग्धे अलोमसिरे प्रशस्यते । लोमसिरे प्रव्राजयेते ।

पृष्ठं सममुपरिविशालमसिरमलोमकमनावर्तकं प्रशस्यते । मध्ये निम्नमायुष्मताम् । निर्भुग्नं दुःखभागिनाम् । संक्षिप्तमनायुषाम् । लोमशममैत्राणामल्पापत्यानाञ्च ।

लोमस्कन्धो वणिग्भारजीवी कितवो रंगजीवी वा । शुष्कांसो दरिद्रः । तावुभौ दीर्घायुषौ कदाचित् प्रव्रजेतामपि । स्निग्धांसः कर्षकः । पीनांस आढ्यः । कठिनांसः शूरः । शिथिलांसोऽ(स)शक्तः उन्नतांसः पुमान् प्रशस्यते । अध्यंसा

### [1]सात्म्यतः परीक्षा

| | |
|---|---|
| घृतक्षीरतैलमांसरससात्म्याः<br>सर्वरससात्म्याः | बलवन्तः<br>क्लेशसहाः<br>चिरजीविनः |
| रूक्षसात्म्याः<br>एकरससात्म्याः | अल्पबलाः<br>अल्पक्लेशसहाः<br>अल्पायुषः<br>अल्पसाधनाः |
| व्यामिश्रसात्म्याः | मध्यबलाः |

### [2]सत्त्वतः परीक्षा

| | |
|---|---|
| सत्त्वम् | प्रवरम्<br>मध्यम<br>अवरम् |

---

कन्या। विपरीते तद्गुणहानिः कक्षावुन्नतौ पृथुलौ पीनौ सुव्यञ्जनौ प्रशस्येते। विपरीतावधन्यौ। भृशलोमशौ च नारीणाम् ( अधन्यौ )।

तथा बाहू आनुपूर्व्योपचितौ गूढारत्नी दीर्घौ जानुस्पृशौ प्रशस्येते। सिराततावायुष्मताम्। पक्ष(क्ष्म)वन्तौ प्रजावताम्। असिरावप्रजानाम्। तिर्यक्सिरौ कृच्छ्रजीविनाम्। तिलवन्तौ प्रव्राजयतः। मशकलक्षणवन्तौ कलहाय।

मणिबन्धने स्थूले पुंसः प्रशस्येते। तनू स्त्रियाः। उभयोरेव तिस्रो—

यवपंक्तयोऽविच्छिन्नाः प्रशस्यन्ते। प्रथमा धन्या। द्वितीया मुख्या। तृतीया प्रजायुषे। सर्वाश्चेदविच्छिन्नाः स्निग्धा व्यक्तगंभीरलिखिता आधिपत्याय। ‥‥‥एकापिचेदविच्छिन्नाव्यक्ता सुखायोपपद्यते‥‥‥।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

( केशाः ) स्त्रीणामतिह्रस्वा अतिदीर्घाश्च निंदिताः।

केशभूमिः स्निग्धा निर्मला निर्व्रणा लोहिता च प्रशस्यते।

मत्तगजवृषभसिंहशार्दूलहंसगतयोऽधिपतयः। स्तिमितगतयो धन्याः। चपलगतयः चपलसुखदुःखलाभिनः। तिर्यग्गतयस्त्वधन्याः। स्खलनाश्चाङ्गविस्फोटिनश्चाप्रशस्ताः।

अतिगौरमतिकृष्णमतिदीर्घमतिह्रस्वमतिकृशमतिस्थूलमतिलोमशमलोमशमतिकठिनमतिमृदु च शरीरेष्वप्रशस्तमुच्यते।

तथा बालानां रुषितरुदितस्वप्नजागरक्रोधहर्षविसर्गादानपंक्तिस्थैर्यगाम्भीर्याणि युक्तानि गुणाधिकानि प्रशस्यन्त इति।

( का. सं. सूत्र. अ. २८॥६॥ )

१. सात्म्यतश्चेति—सात्म्यं नाम तद्यत् सातत्येनोपयुज्यमानमुपशेते। तत्र ये घृतक्षीरतैलमांसरससाम्म्याः सर्वरससात्म्याश्च ते बलवन्तः क्लेशसहाश्चिरजीविनश्च भवन्ति। रूक्षसात्म्याः पुनरेकरससात्म्याश्च ये ते प्रायेणाल्पबलाश्चाक्लेशसहाश्चाल्पायुषोऽल्पसाधनाश्च भवन्ति। व्यामिश्रसात्म्यास्तु ये ते मध्यबलाः सात्म्यनिमित्ततो भवन्ति। ( च. वि. अ. ८ )

२. सत्त्वतश्चेति—सत्त्वमुच्यते मनः, तच्छरीरस्य तन्त्रकमात्मसंयोगात्। तत्त्रिविधं बलभेदेन—प्रवरं मध्यमवरञ्चेति। अतश्च प्रवरमध्यावरसत्त्वाः पुरुषा भवन्ति। तत्र प्रवरसत्त्वाः सत्त्वसाराः ते सारेषूपदिष्टाः, स्वल्पशरीरा ह्यपि ते निजागन्तुनिमित्तासु महतीष्वपि पीडा स्वव्यग्रा भवन्ति। सत्त्वगुणवैशेष्यात्। मध्यसत्त्वास्त्वपरानात्मन्युपनिधाय संस्तम्भयन्त्यात्मनात्मानं परैर्वापि संस्तभ्यन्ते। हीनसत्त्वास्तु नात्मना नच परैः सत्त्वबलं प्रतिशक्यन्ते उपस्तम्भयितुं, महाशरीरा अपि ते स्वल्पानामपि वेदनानामसहा दृश्यन्ते। सन्निहितभयशोकमोहलोभमाना रौद्रभैरवद्विष्टबीभत्सविकृतकथास्वपि च पशुपुरुषमांसशोणितानि चावेक्ष्य विषादवैवर्ण्यमूर्च्छोन्मादभ्रमप्रयतनानामन्यतममाप्नुवन्त्यथवा मरणमिति

**• [1]आहारशक्तितः परीक्षा**

- आहारशक्तिः
  - अभ्यवहरणशक्तिः — अधिका, मध्या, अल्पा
  - जरणशक्तिः — अधिका, मध्या, अल्पा
  - आहारशक्तिः — अधिका, मध्या, अल्पा

**[2]व्यायामशक्तितः परीक्षा**

- बलम्
  - प्रवरम्
  - मध्यम्
  - अवरम्

**[3]वयस्तः परीक्षा**

- बालम् ( आषोडशवर्षम् )
  - क्षीरपः ( संवत्सरपरः )
  - क्षीरान्नादः ( द्विसंवत्सरपरः )
  - अन्नादः
- मध्यम् ( आषष्टिवर्षम् )
  - वृद्धिः ( आविंशतेः )
  - यौवनम् ( आत्रिंशतः )
  - सम्पूर्णता ( आचत्वारिंशतः )
  - परिहाणिः
- जीर्णम्—वृद्धम्
  ( आवर्षशतम् )

**देशतः[4] परीक्षा**

अयं कस्मिन् देशे जातः

" " " संवृद्धः

" " " व्याधितः

---

१. आहारशक्तितश्चेति—आहारशक्तिरभ्यवहरणशक्त्या जरणशक्त्या च परीक्ष्या, बलायुषी ह्याहारायत्ते।

२. व्यायामशक्तितश्चेति—व्यायामशक्तिरपि कर्मशक्त्या परीक्ष्या, कर्मशक्त्या ह्यनुमीयते कर्मत्रैविध्यम्।

३. वयस्तश्चेति—कालप्रमाणविशेषापेक्षिणी हि शरीरावस्था वयोभिधीयते। तद्वयो यथास्थूलभेदेन त्रिविधम्—बालं मध्यं जीर्णमिति। तत्र बालमपरिपक्वधातुमजातव्यञ्जनं सुकुमारमक्लेशसहमसम्पूर्णबलं श्लेष्मधातुप्रायमाषोडशवर्षं, विवर्धमानधातुगुणं पुनः प्रायेणानवस्थितसत्त्वमात्रिंशद्वर्षमुपदिष्टं, मध्यं पुनः समत्वागतबलवीर्यपौरुषपराक्रमग्रहणधारणस्मरणवचनविज्ञानसर्वधातुगुणं बलस्थितमवस्थितसत्त्वमविशीर्यमाणधातुगुणं पित्तधातुप्रायमाषष्टिवर्षमुपदिष्टम्। अतः परं परिहीयमानधात्विन्द्रियबलवीर्यपौरुषपराक्रमग्रहणधारणस्मरणवचनविज्ञानं भ्रश्यमानधातुगुणं वातधातुः प्रायं क्रमेण जीर्णमुच्यते आवर्षशतम्। वर्षशतं खल्वायुषः प्रमाणमस्मिन्काले सन्ति, पुनरधिकोनशतवर्षजीविनो मनुष्याः। तेषां विकृतिवर्ज्यैः प्रकृत्यादिबलविशेषैरायुषो लक्षणतश्च प्रमाणमुपलभ्य वयसस्त्रित्वं विभजेत्। एवं प्रकृत्यादीनां विकृतिवर्ज्यानां भावानां प्रवरमध्यावरविभागेन बलविशेषं विभजेत्। विकृतिबलत्रैविध्येन तु दोषबलं त्रिविधमनुमीयते। ततो भैषज्यस्य तीक्ष्णमृदुमध्यविभागेन त्रित्वं विभज्य यथादोषं भैषज्यमवधारयेत्। ( च. वि. अ. ८ )

षोडशसप्तत्योरन्तरे मध्यं वयः ( सु. सू. अ. ३५ )

४. देशस्तु भूमिरातुरश्च। तत्र भूमिपरीक्षा आतुरपरिज्ञानहेतोर्वा स्यादौषधपरिज्ञानहेतोर्वा। तत्र तावदियमातुरपरिज्ञानहेतोः तद्यथा—अयं कस्मिन् देशे जातः, संवृद्धो व्याधितो वा। तस्मिंश्च देशे मनुष्याणामिदमाहारजातम्,

तस्मिन् देशे मनुष्याणामिदमाहारजातम् ।

” ” ” विहारजातम् ।

” ” ” आचारजातम् ।

” ” ” बलम् एतावद् ।

” ” ” सत्त्वमेवंविधम् ।

” ” ” सात्म्यमेवंविधम् ।

” ” ” एवंविधो दोषः ।

” ” ” भक्तिरियम् ।

” ” ” इमे व्याधयः ।

” ” ” हितमिदमहितमिदम् ।

---

इदं विहारजातम् , इदमाचारजातम् , एतावच्च बलम्, एवं विधं सत्त्वम्, एवं विधं सात्म्यम्, एवं विधो दोषः, भक्तिरियम् , इमे व्याधयः, हितमिदम् , अहितमिदमिति प्रायो ग्रहणेन ॥ ( च. वि. अ. ८ )

देशस्त्वानूपो जाङ्गलः साधारण इति । तत्र बहूदकनिम्नोन्नतनदीवर्षगहनो मृदुशीतानिलोब हुमहापर्वतवृक्षो मृदुसुकुमारोपचितशरीरमनुष्यप्रायः कफवातरोगभूयिष्ठश्चानूपः । आकाशसमः प्रविरलाल्पकण्टकिवृक्षप्रायोऽल्पवर्षप्रस्रवणोदपानोदकप्राय उष्णदारुणवातः प्रविरलाल्पशैलः स्थिरकृशशरीरमनुष्यप्रायो वातपित्तरोगभूयिष्ठश्च जाङ्गलः । उभयदेशलक्षणः साधारण इति । ( सु. सू. अ. ३५ )

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

त्रिविधः खलु देशो जाङ्गलः, अनूपः साधारणश्चेति । तत्र जाङ्गलः पर्याकाशभूयिष्ठः, तरुभिरपि च कदरखदिरासनाश्वकर्णधवतिनिशशल्लकीसालसोमवल्कबदरीतिन्दुकाश्वत्थवटामलकीवनगहनः, अनेकशमीककुभशिंशपाप्रायः, स्थिरशुष्कपवनबलविधूयमानप्रनृत्यत्तरुणविटपः, प्रततमृगतृष्णिकोपगूढस्तनुखरपरुषसिकताशर्कराबहुलः, लावतित्तिरिचकोरानुचरितभूमिभागः, वातपित्तबहुलः, स्थिरकठिनमनुष्यप्रायो ज्ञेयः । अथानूपो हिन्तालतमालनारिकेलकदलीवनगहनः सरित्समुद्रपर्यन्तप्रायः, शिशिरपवनबहुलः, वञ्जुलवानीरोपशोभिततीराभिः सरिद्भिरुपगतभूमिभागः, क्षितिधरनिकुञ्जोपशोभितः, मन्दपवनानुवीजितक्षितिरुहगहनः, अनेकवनराजीपुष्पितवनगहनभूमिभागः, स्निग्धतनुप्रतानोपगूढः, हंसचक्रवाकबलाकानन्दीमुखपुण्डरीककादम्बमद्गुकोयष्टिभृंगराजशतपत्रमत्तकोकिलानुनादिततरुविटपः, सुकुमारपुरुषः पवनकफप्रायो ज्ञेयः । अनयोरेव द्वयोर्देशयोर्वीरुद्वनस्पतिवानस्पत्यशकुनिमृगगणयुतः स्थिरसुकुमारबलवर्णसंहननोपपन्नसाधारणगुणयुक्तपुरुषः साधारणो ज्ञेयः । ( च. क. अ. १ )

IGNCA RAR
R-264
ACC. No

PRINTED BY
JAYA KRISHNA DAS GUPTA
VIDYA VILAS PRESS, BANARAS.
Indira Gandhi National
Centre for the Arts

Indira Gandhi National
Centre for the Arts